Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक

हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 41 अंक-15
कल्पादि सम्वत् 1972949117

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 05 जुलाई से 11 जुलाई 2017 तक
आषाढ़ शुक्ल द्वादशी से श्रावण कृष्ण द्वितीया सम्वत् 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

बड़ी कठिन है जीएसटी.. पृष्ठ- 3

योग अपनाओ रोग.... पृष्ठ- 4

विज्ञान व धर्म की... पृष्ठ- 5

हिन्दू अस्तिव, संकट... पृष्ठ- 8

लाचार नजर आ... पृष्ठ- 12

- विश्व को हो रहा है भारत बोध
- राष्ट्रीय सुरक्षा की अवहेलना क्यों?
- किसी की मदद का इंतजार नहीं, खुद कमान संभालेगा हिंदू
- तीन तलाक, निंदा से निदान की ओर...
- कश्मीर घाटी में अलगाववादियों के समर्थक

केरल में पाकिस्तानी क्रिकेट टीम की जीत का जश्न मना रहे २३ लोगों पर केस दर्ज

देश द्रोहियों को पाकिस्तान भेजा जाये–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

१८ जून को लंदन में हुए इस फाइनल क्रिकेट मैच में पाकिस्तान ने भारत को १८० रनों से हराकर प्रतिष्ठित ट्राफी पर कब्जा कर लिया था। कासरगोड़ केरल चौंपियंस ट्राफी के फाइनल मैच में भारत पर पाकिस्तान की जीत का कथित तौर पर जश्न मनाने के लिए २३ लोगों पर दंगा करने एवं गैरकानूनी तरीके से इक्ट्ठा होने समेत विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया गया है। पुलिस ने बताया कि बीजेपी के स्थानीय नेता राजेश शेट्ठी की ओर से कल दर्ज करायी कंपलेंट के आधार पर कुंबाडाजे पंचायत के रजाक, मसूद, सिराज और २० अन्य लोगों

शेष पृष्ठ 11 पर

मुंबई धमाकों के गुनाहगार ने कोर्ट से मांगी जिंदगी की भीख

आंतकियों के साथ कोई नरमी न हो–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

साल १९९३ में हुई मुंबई बम धमाकों में दोषी करार दिए गए ६ आरोपियों में से एक फिरोज खान को कोर्ट के सामने जिंदा रहने की भीख मागने लगा। इस मामले में दोषियों पर सजा के लिए बहस शुरू हुई तो सीबीआई ने फिरोज खान समेत सभी दोषियों के लिए फांसी की मांग की। फांसी का नाम सुनते ही फिरोज खान को महात्मा गांधी से लेकर मानवाधिकार याद आ गए। वह हाथ जोड़कर फूट––फूटकर रोने लगा और जज से फांसी की सजा न देने की गुहार करने लगा। उसके अपने पक्ष में कई तर्क भी दिए फिरोज ने टाडा अदालत के सामने याचिका देकर फांसी से बख्शने और आजीवन कारावास की सजा देने की गुहार लगायी है। फिरोज ने कहा कि मुझे जिंदगी भर जेल में रखिएगा लेकिन डेथ मत दीजिएगा। मुझे २५–५० साल का सजा दीजिएगा, मुझे पैरोल मत देना। मेरे बच्चे जाने कि मैं जिंदा हूं। दरअसल अभी पिछले हफ्ते ही १६ जून को १९९३ में मुंबई में हुए बम धमाकों के मामले की सुनवाई कर रही टाडा अदालत ने अबू सलेम समेत ६ अभियुक्तों को दोषी करार दिया है। इस मामले में अदालत ने ताहिर मर्चेंट, मोहम्मद दौसा, फिरोज अब्दुल राशिद खान और करीमुल्लाह को भी दोषी करार दिया है। सलेम को कोर्ट ने आपराधिक साजिश में शामिल होने का दोषी पाया है, उसे आतंकवाद संबंधित गतिविधियों का भी दोषी पाया गया है। अदालत ने सलेम को हथियार लाने और बांटने का दोषी माना है। वहीं दौसा को मुख्य साजिशकर्ता के तौर पर ब्लास्ट और हत्या करने का दोषी माना है। दौसा ने ही अबू सलेम के घर पर हमलों की साजिश रची थी। उस पर विस्फोटक लाने के लिए अबू सलेम को कार देने का भी आरोप है। मुंबई में

शेष पृष्ठ 11 पर

प्रसिद्ध कथावाचक श्री रामचन्द्र डोंगरे जी महाराज के अमृत वचन

(१) आनन्द अपने भीतर ही निवास करता है किन्तु मनुष्य उसे स्त्री मे, घर में तथा बाह्य सुखो में खोज रहा है।
(२) भगवान श्रीकृष्ण का साक्षात् दर्शन करने के लिए ही मनुष्य का जन्म हुआ है।
(३) सुन्दर भवनो और उनके भोग विलास मे लिप्त रहने वाले व्यक्ति प्रभु प्राप्ति के अधिकारी नहीं है।
(४) जो काम सुख में लीन है वे योगाभ्यास नही कर सकते। भोगी योगी बनने का प्रयत्न करेगा तो रोगी बन जाएगा।
(५) आपका प्रत्येक व्यवहार भक्तिमय होना चाहिए।
(६) घर में रहना पाप नहीं है किन्तु उसके भीतर अति आसक्ति पाप है।
(७) यह भक्ति का समय है—यह भोग का, इस प्रकार का भेदभाव रखने वाला व्यक्ति भक्ति नहीं कर सकता।
(८) भगवान का वन्दन केवल शरीर से ही नहीं, मन से भी कीजिये। ऐसा वन्दन भगवान को प्रेम बन्धन मे बाँध लेता है।
(६) दुःख मे साथ देने वाला ईश्वर होता है, सुख मे साथ देने वाला संसारी प्राणी।
(१०) भगवान की कृपा रहे तो जीव विषयासक्त नही होता।
(११) प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ मे भगवान का स्मरण करो।
(१२) भगवान का आश्रय लेने वाला भय मुक्त हो जाता है।
(१३) निरन्तर काल का भय मनुष्यो को पाप कर्म से मुक्त रखता है।
(१४) जिसने काम वासना पर विजय पा ली है उसे मृत्यु भय नहीं रहता।
(१५) भगवान मे मन लगाये बिना काम क्रोधादि विकार नष्ट नहीं होते।
(१६) धीरे-धीरे मृत्यु की तैयारी करो।
(१७) जब तक लौकिक सम्बन्धो की स्मृति बनी रहेगी, ईश्वर में आसक्ति नही होगी।
(१८) वासना ही पुनर्जन्म का कारण होती है।
(१६) अत्यधिक प्रिय वस्तु भगवान को अर्पित करने से भगवान अपने ऊपर प्रसन्न होते है।
(२०) जीवन मे संयम तथा सदाचार न हो तो पुस्तको का ज्ञान कुछ काम नहीं आता।
(२१) मितभाषी व्यक्ति सत्यवादी होता है।
(२२) मन को सदा पवित्र रखिये, कारण मृत्यु के बाद भी मन साथ जाने वाला है।

भगवान ही सदा सहायक

सुख में साथी अनेक है, दुख में सब कतराय।
जो दुख में भी साथ है, सच्चा मित्र कहाय।।
स्वार्थ का संसार है, काम पड़े बतियाय।
काम निकलने पर कोई, सूरत नही बताय।।
सच्चा साथी राम है, कभी न छोड़े साथ।
मन में दृढ़ विश्वास रखो, प्रभु तुम्हारे साथ।।
संकट में भगवान ही, लेवे तुरन्त सम्हाल।
सच्चे दिल से पुकारिये, हे गिरधर गोपाल।।
राज सभा में लुट रही, द्रुपद सुता की लाज।
मौन धार बैठा रहा, सारा राज समाज।।
किसीने भी ना सुनी, स्त्री की करुण पुकार।
प्रभु से विनती करन लगी, आवो कृष्णमुरार।।
द्रौपदी की टेर सुन, कृपा सिंधु श्रीनाथ।
लाज बचाने भक्त की, दौड़े दीनानाथ।।
चीर बढ़ाया कृष्णा का, दुःशासन हैरान।
चक्कर खाकर गिर पड़ा, नीच दुष्ट शैतान।।
धिक्कार है ऐसा राजतंत्र, जहाँ नारी है असहाय।
धिक्कार है ऐसे गुणीजन, बैठे सिर को झुकाय।।
इस घटना से स्पष्ट "हरि", जग अपना नहीं होय।
केवल एक भगवान ही, सदा सहायक होय।।

साप्ताहिक राशिफल

मेष - इस सप्ताह कुछ लोगों की मानसिक उर्जा में वृद्धि होगी। कुछ ऐसे काम भी करने पड़ सकते है, जिन्हें करने की आपकी इच्छा नहीं होगी। पिता के स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। आप सभी को अपने अनुसार काम करने की जो छूट दिये हुये है,उसके दूरगामी परिणाम बेहतर नहीं होंगे।

वृष : इस सप्ताह कुछ लोगों को अपने कार्यो को लेकर घबराहट व बैचनी पर नियन्त्रण रखने की आवश्यकता है। हर काम का एक निर्धारित समय होता है, वह समय आने पर सम्पन्न होगा। आप–अपने पद, स्थिति प्राप्त जायदाद व सौदा आदि विषयों से सम्बन्धित बातों पर चिन्तित न हों।

मिथुन - इस सप्ताह कुछ लोग अपने जीवन में निरन्तर संघर्ष करने से दुःखी हो रहे है, परन्तु संघर्ष ही सफलता का पर्याय है। नवयुवक अपने प्यार की सीमा को निर्धारित करें तभी आप–अपने लक्ष्य का भेदन कर सकते है। व्यर्थ के तर्क–विर्तक में न पड़े अन्यथा तनाव हो सकता है।

कर्क - इस सप्ताह कुछ लोगों को अपने कार्यो को लेकर घबराहट व बैचनी पर नियन्त्रण रखने की आवश्यकता है। हर काम का एक निर्धारित समय होता है, वह समय आने पर सम्पन्न होगा। आप–अपने पद, स्थिति प्राप्त जायदाद व सौदा आदि विषयों से सम्बन्धित बातों पर चिन्तित न हों।

सिंह - इस सप्ताह कुछ लोगों को अपनी प्रासंगिता बनायें रखने की आवश्यकता है। जीवन में अंधकार को दूर करने के लिए प्रकाश की एक किरण ही काफी है। योजानायें बनाने से कार्य नहीं चलेगा उस पर अमल भी करना पड़ेगा। नवयुवक अपने क्रोध पर नियन्त्रण रखें।

कन्या - इस सप्ताह कुछ लोगों के बहुत दिनों से रूके कार्य जिन पर आपका ध्यान अभी तक नहीं जा रहा था वो कार्य फिर से शुरू होंगे और आपको सफलता भी मिलेगी। बातचीत करने में सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

तुला - इस सप्ताह आप किसी के लालच में आ सकते हैं और वह आपका गलत तरीके से इस्तेमाल कर सकता है, अतः सावधानी अपेक्षित है। अपनी योजनाओं के प्रति सतर्क व सचेत रहने की आवश्यकता है। अपनी आवश्यकताओं पर लगाम लगायें तभी जीवन की गाड़ी चल पायेगी।

वृश्चिक - इस सप्ताह घर में लोगों का आना जाना लगा रहेगा जिससे मानसिक व शारीरिक थकान महसूस होगी। पितृ पक्ष से मधुरतम सम्बन्ध बनेंगे। अर्थ से सम्बन्धित किये गये प्रयास सफल होंगे। योजनाओं को कार्य रूप देने के लिए यह समय अनुकूल है।

धनु - इस सप्ताह आप किसी को भी झूठे आश्वासन न दें, ये आदत त्याग देने पर जीवन में बहुत लाभ होगा। एक बार आप लोगों की नजर से उतर गये तो समझों बरसों लग जायेंगे इज्जत बनाने में। दिल से बल्कि दिमाग से काम लेने की आवश्यकता है, वरना ठगे जायेंगे।

मकर : इस सप्ताह कार्यक्षेत्र व व्यवसाय में कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। कुछ लोगों का जीवन साथी से टकराव हो सकता है। समाज के लोगों को आपसे बड़ी अपेक्षायें रहेंगी। संयमित होकर कार्य करें अन्यथा आपकी विश्वसनीयता भंग हो सकती है।

कुम्भ : इस सप्ताह कुछ लोगों के मन में अतीत घटनायें हावी रह सकती है। आप जड़वत व अवसादग्रस्त महसूस करेंगे। जिम्मेदारियों के प्रति मन में उदासीनता के भाव बने रहेंगे। कार्य क्षेत्र में स्थितिय सामान्य बनी रहेगी। पारिवारिक कार्यो को लेकर आप व्यस्त रहेंगे।

मीन : इस सप्ताह ऑफिस के साथी आपकी हर समस्या का समाधान खोजने में मदद करेंगे। घर–गृहस्थी में सामान्य माहौल बना रहेगा। अधिकारियों तथा प्रतिद्वंद्वियों से कड़ी चुनौती मिलने की सम्भावना नजर आ रही है।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्य-मनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम्।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं-स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम्।।

आपको आदि, अन्त और मध्य से रहित, अनन्त सामर्थ्य से युक्त, अनन्त भुजावाले, चन्द्र–सूर्यरूप नेत्रों वाले, प्रज्वलित अग्निरूप मुखवाले और अपने तेज से इस जगत् को संतप्त करते हुए देखता हूँ।।१६।।

द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः।
दृष्टवादुतं रूपमुग्रं तवेदं-लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन्।।

हे महात्मन्! यह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच का सम्पूर्ण आकाश तथा सब दिशाएँ एक आप से ही परिपूर्ण हैं तथा आपके इस अलौकिक और भयंकर रूप को देखकर तीनों लोक अति व्यथा को प्राप्त हो रहे हैं।।२०।।

अमी हि त्वां सुरसङा विशन्ति केचिदीताः प्राज्जलयो गृणन्ति।
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसङाः स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः।।

वे ही देवताओं के समूह आप में प्रवेश करते हैं और कुछ भयभीत होकर हाथ जोड़े आपके नाम और गुणों का उच्चारण करते हैं तथा महर्षि और सिद्धों के समुदाय 'कल्याण हो' ऐसा कहकर उत्तम –उत्तम स्तोत्रों द्वारा आपकी स्तुति करते हैं।।२१।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 05 जुलाई से 11 जुलाई 2017 तक

अध्यक्षीय

विश्व को हो रहा है भारतबोध

भारतीय ज्ञान परंपरा में योग एक अद्भुत अनुभव है। योग भारतीय ज्ञान का एक ऐसा वरदान है, जिससे मनुष्य की चेतना को वैश्विक चेतना से जुड़ने का अवसर मिलता है। वह स्वयं को जानता है और अपने परिवेश के साथ एकाकार होता है। विश्व योग दिवस के बहाने भारत को विश्व से जुड़ने और अपनी एक पहचान का मौका मिला है। दुनिया के तमाम देश जब योग के बहाने भारत के साथ जुड़ते हैं तो उन्हें भारतबोध होता है, वे एक ऐसी संस्कृति के प्रति आकर्षित होते हैं जो वैश्विक शांति और सद्भाव की प्रचारक है। योग दरअसल भारत की शान है, योग करते हुए हम सिर्फ स्वास्थ्य का विचार नहीं करते बल्कि मन का भी विचार करते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने विश्व योग दिवस को मान्यता देकर भारत के एक अद्भुत ज्ञान का लोकव्यापीकरण और अंतराष्ट्रीयकरण करने में बड़ी भूमिका निभाई है। इसके लिए २१ जून का चयन इसलिए किया गया क्योंकि इस दिन सबसे बड़ा दिन होता है। योग कोई धार्मिक कर्मकाण्ड नहीं है यह मन और जीवन को स्वस्थ रखने का विज्ञान है। यह पूर्णतः वैज्ञानिक पद्धति है जिससे व्यक्ति की जीवंतता बनी रहती है। योग को अंतरराष्ट्रीय मान्यता मिलने के बाद पूरी दुनिया भारत की ओर देख रही है।

राष्ट्रीय उद्‌बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

भारत के योगशिक्षकों की पूरी दुनिया में मान्यता बढ़ी है। भारतीय मूल के योगशिक्षकों या भारत में प्रशिक्षित योग शिक्षकों को लोग अधिक भरोसे से देखते हैं। इस बहाने भारत के योगाचार्यों को एक विस्तृत आकाश मिला है और वे अपनी प्रतिभा से वैश्विक स्तर पर अपना स्थान बना रहे हैं। पाठ्यक्रमों में स्थान मिलने के बाद योग की अकादमिक उपस्थिति भी बन रही है। योगिक स्वास्थ्य प्रबंधन जैसे विषय आज हमारे समाज में सम्मान से देखे जा रहे हैं। दुनिया को अच्छे–योग्य–चरित्रवान योग शिक्षक उपलब्ध कराना हमारी जिम्मेदारी है। यह दायित्वबोध हमें काम के अवसर तो देगा ही भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक पटल पर स्थापित भी करेगा। गत वर्ष वैश्विक योग दिवस पर दुनिया भर के देशों में योग के आयोजन हुए। जिनमें तमाम मुस्लिम देश भी शामिल थे। दुबई के बुर्ज खलीफा में स्वयं योगगुरु बाबा रामदेव ने १० हजार महिलाओं को योग करवाया। इस अवसर उन्होंने अपने संबोधन में कहा था कि योग का कोई पंथ नहीं है यह १०० प्रतिशत पंथनिरपेक्ष अभ्यास है। उनका कहना था कि यह जीवन पद्धति है। दुनिया में मनुष्य आज बहुत अशांत है। उसके मन में शांति नहीं है। इसलिए सर्वत्र हिंसा, आतंकवाद और अशांति का वातावरण है। ऐसे कठिन समय में योग का अनुगमन और अभ्यास विश्वशांति का कारण बन सकता है। मनुष्य का अगर अपने मन पर नियंत्रण हो। उसे चेतना के तल पर शांति अनुभव हो दुनिया में हो रहे तमाम टकराव टाले जा सकते हैं। वैसे भी कहा जाता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन–मस्तिष्क निवास करता है। योग जहां आपके तन को शक्ति देता है वहीं जब आप प्राणायाम की ओर बढ़ते हैं तो वह आपके मन का भी समाधान करता है। मन की शांति के लिए आपको जंगलों में जाने की जरूरत नहीं है। योग आपको आपके आवास पर ही अद्भुत शांति का अनुभव देता है। एकाग्र मन और संतुलित सांसें दरअसल बहुत कुछ साध लेती हैं। योग दिवस के बहाने यह अवसर एक उत्सव में बदल गया है। योग दिवस के मौके पर हर साल कुछ रिकार्ड बन रहे हैं। गत वर्ष १ लाख से ज्यादा लोगों ने योग कर तोड़ा रिकॉर्ड। फरीदाबाद में बाबा रामदेव के कार्यक्रम में १ लाख से ज्यादा लोगों ने एक साथ योग करके गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज करवाया है। वही पतंजलि के ४०८ लोगों ने एक साथ ५ सेकेंड शीर्षासन कर पुराने रिकॉर्ड को तोड़ा है। इससे पहले यह रिकॉर्ड स्विजरलेंड के नाम था जहां २६५ लोगों ने एक साथ ५ सेकेंड तक शीर्षासन किया था। इस प्रकार की घटनाएं बताती हैं कि योग को लेकर देश में उत्साह का वातावरण है। हर आयु वर्ग के लोग अब इस गतिविधि में हिस्सा ले रहे हैं। देश के संत समाज और योगियों ने इस अद्भुत ज्ञान को आम लोगों तक पहुंचाने के लिए सार्थक प्रयत्न किए हैं। समाज की समवेत अभिरूचि से यह अभियान एक आंदोलन में बदल गया है इसमें दो राय नहीं है। उम्मीद की जानी चाहिए कि तन–मन और आत्मा को साधने वालाए बदलने वालाए स्वस्थ रखने वाला यह अभियान जनअभियान बने। गांव–गांव तक फैले और स्वस्थ–सुंदर भारत वैश्विक नेतृत्वकारी भूमिका में दिखे।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

बड़ी कठिन है जीएसटी की डगर

गुड्स एण्ड सर्विस टैक्स जुलाई से लागू होने जा रहा है। वर्तमान में फैक्ट्री मालिकों को एक्साइज ड्यूटी एवं वैट अलग–अलग अदा करना होता है तथा रेस्तरां आदि को सर्विस टैक्स तथा वेट अलग–अलग अदा करना होता है। जीएसटी लागू होने के बाद ये दोनों टैक्स एक हो जायेंगे। उद्यमियों तथा व्यापारियों को दो मासिक रिटर्न नहीं भरने होंगे। साथ–साथ अंतरराज्यीय व्यापार आसान हो जाएगा। एक राज्य में अदा किए गए जीएसटी का सेट–ऑफ दूसरे राज्य में लिया जा सकेगा। एक राज्य से दूसरे राज्य में माल भेजने को बार्डर पर प्रवेश के फार्म की जरूरत नहीं होगी। जीएसटी व्यवस्था में टैक्स की पांच श्रेणियां हैं – शून्य, ५, १२, १८ एवं २८ प्रतिशत। विभिन्न माल को इन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। जैसे फल, सब्जी, छपी हुई पुस्तकें एवं अखबार को शून्य श्रेणी में रखा गया है। १००० रुपए से कम के रेडीमेड कपड़ों एवं ५०० रुपए से कम के जूते चप्पलों को ५ प्रतिशत की श्रेणी में रखा गया है। घी, मक्खन, नमकीन को १२ प्रतिशत की श्रेणी में रखा गया है। ५०० रुपए से अधिक के जूते–चप्पल, चीनी, आइसक्रीम, स्टील के उत्पाद एवं अधिकतर अन्य उत्पादों को १८ प्रतिशत की श्रेणी में रखा गया है। बीड़ी, चाकलेट, पान मसाला, बोतलबंद पीने का पानी, वाशिंग मशीन, कार तथा बाइक को २८ प्रतिशत की श्रेणी में रखा गया है। कमजोर वर्गों द्वारा खपत की जाने वाली वस्तुओं को न्यून श्रेणी में रखा गया है जबकि उच्च वर्ग द्वारा खपत की जाने वाली वस्तुओं को २८ प्रतिशत की श्रेणी में रखा गया है। साथ ही कुछ विसंगतियां भी दिखती हैं। जैसे आयुर्वेदिक दवाओं, छाता, सिलाई मशीन, स्वास्थ्य की जांच की मशीनें जैसे बीपी मशीन तथा छात्रों द्वारा उपयोग की जाने वाली नोट बुक को १२ प्रतिशत की श्रेणी में रखा गया है। इन माल को ज्यादा छूट देना चाहिए था और ५ प्रतिशत की श्रेणी में रखना था। १२ प्रतिशत की श्रेणी में मोबाइल फोन को भी रखा गया है। इसे १८ या २८ प्रतिशत की श्रेणी में रखा जा सकता था। जीएसटी का दूसरा पक्ष कुल टैक्स का है। देखना होगा कि सब माल को जोड़ लेने पर कुल टैक्स वसूली पर क्या प्रभाव पड़ेगा। दूसरे देशों में जीएसटी के दोनों तरह के प्रभाव देखे गए हैं। मलेशिया में २०१५ में जीएसटी लागू किया गया था। नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ मलेशिया द्वारा किए गए अध्ययन में पाया गया कि ६४ प्रतिशत नागरिकों पर टैक्स का अतिरिक्त बोझ पड़ा और उनकी कुल खपत में कमी आई। दूसरे अध्ययन में पाया गया कि ६८ प्रतिशत कर्मियों ने जीएसटी के कारण वेतन वृद्धि की मांग की थी। आस्ट्रेलिया में जीएसटी का गरीब पर बोझ ज्यादा पड़ा है। जीएसटी के कारण गरीब को अपनी आय का ४.४ प्रतिशत अधिक टैक्स देना पड़ा जबकि अमीर को मात्र १.४ प्रतिशत। कोलम्बिया, पेरू तथा जापान में भी आम आदमी पर इसी प्रकार का नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इसके विपरीत वियतनाम, इथोपिया एवं पाकिस्तान में जीएसटी का आम आदमी पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इन देशों में आम आदमी द्वारा खपत किए जाने वाले माल पर टैक्स की दरें कम रखी गई थीं। अपने देश में विभिन्न राज्यों द्वारा अलग–अलग माल पर अलग–अलग दरों से सेल टैक्स वसूल किया जा रहा था। अत कुल प्रभाव का आकलन करना फिलहाल कठिन है। एक ही माल पर किसी राज्य में जीएसटी की दर सेल टैक्स से कम हो सकती है। उसी माल पर दूसरे राज्य में जीएसटी की दर ऊंची हो सकती है। जीएसटी का उपभोक्ता पर पड़ने वाले अंतिम प्रभाव कुछ समय बाद ही पता लगेगा। जीएसटी के लागू होने पर असंगठित क्षेत्र के उद्यमियों पर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। वर्तमान में असंगठित क्षेत्र में तमाम छोटे उद्योग चलते हैं जैसे साबुन या मोमबत्ती बनाना, कागज के लिफाफे बनाना इत्यादि। जीएसटी में छोटे उद्योगों को टैक्स के दायरे से बाहर रखा गया है। इसके बावजूद इन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। चूंकि इनके द्वारा सप्लाई किए गए माल पर सेट–ऑफ नहीं मिलेगा। जैसे मान लीजिए किसी कंपनी को कागज के लिफाफे खरीदने हैं। कुटीर उद्योग एवं बड़े उद्यमी द्वारा इन्हें एक ही दाम पर सप्लाई करने की पेशकश की जाती है। दोनों, यानी कुटीर उद्योग एवं बड़े उद्यमी द्वारा कागज एक ही दुकान से एक ही दाम पर खरीदा जाता है। कागज की खरीद पर दोनों द्वारा वैट अदा किया जाता है। ऐसे में कंपनी यदि बड़े उद्यमी से लिफाफे खरीदेगी तो लिफाफे के निमार्ता द्वारा कागज की खरीद पर अदा किए गए वैट का उसे सेट–ऑफ मिलेगा। उसी लिफाफे को कुटीर उद्यमी से खरीदने पर यह सेट ऑफ नहीं मिलेगा। चूंकि कुटीर उद्यमी द्वारा जीएसटी में पंजीकरण नहीं कराया गया है और मासिक रिटर्न दाखिल नहीं किया गया है। फलस्वरूप जीएसटी का उन छोटे एवं कुटीर उद्योगों पर विपरीत प्रभाव पड़ेगा जो कि टैक्स के दायरे से बाहर है। यहां संज्ञान लेना चाहिए कि वैट के अंतर्गत भी असंगठित क्षेत्र की यह समस्या मौजूद है। कुटीर उद्योग द्वारा सप्लाई किए गए माल पर वैट का सेट ऑफ नहीं मिलता है। एक्साइज ड्यूटी के अंतर्गत भी असंगठित क्षेत्र की यह समस्या मौजूद है। कुटीर उद्योग द्वारा सप्लाई किए गए माल पर एक्साइज ड्यूटी का सेट ऑफ नहीं मिलता है। इस समस्या का समाधान जीएसटी के अंतगत है ही नहीं। जीएसटी के इस नकारात्मक प्रभाव को समाज के कमजोर वर्गों को झेलना ही होगा। निर्विवादित है कि जीएसटी के कारण टैक्स प्रशासन का सरलीकरण होगा। इससे अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी। जीएसटी के अंतर्गत टैक्स व्यवस्था के सरलीकरण से अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी। परन्तु यदि उपभोक्ता पर टैक्स का कुल भार बढ़ा और असंगठित क्षेत्र पर नकारात्मक प्रभाव गहरा पड़ा तो यह साहसिक कदम उलटा पड़ेगा।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

योग अपनाओ–रोग भगाओ

योग के अतर्गत योगासनो, प्राणायाम और ध्यान आदि को भी शामिल किया जाता है। योगासनो, प्राणायाम और ध्यान सेहत के लिए किसी वरदान से कम नही है। विभिन्न आसनो से हड्डी, मास–मज्जा और शरीर के भीतरी अग सशक्त होते है। वही प्राणायाम से शरीर के भीतर की नाड़ियाँ सुचारू रूप से कार्य करती है। योग डिप्रेशन और एग्जाइटी जैसे मनोरोगो के इलाज मे सहायक है। यह आपके हृदय को भी स्वस्थ रखने, रक्त शुगर को कम रखने, बैड या खराब कोलेस्ट्रॉल को कम रखने और अच्छे या गुड कोलेस्ट्रॉल के स्तर को बढाने मे भी मदद करता है। नियमित रूप से योग करने से पुराने कमर दर्द से राहत मिलती है और योग हमारी हड्डियो और जोड़ो को लचीला बनाए रखता है। यह पुराने दर्द को नियत्रित रखने मे भी सहायक है। योगासन, ध्यान और प्राणायाम आदि के रूप मे नियमित योग करने से आपके सपूर्ण स्वास्थ्य को फायदा पहुँचता है।

तनाव को करे नियंत्रित : योग करने से तनाव के दौरान एड्रीनेलीन नामक न्यूरो केमिकल कम निकलता है, जिससे मानसिक तनाव नियत्रण मे रहता है। योग हमारे मस्तिष्क को तनावमुक्त और शातचित्त रखने मे मदद करता है। योग से हाई ब्लड प्रेशर को सामान्य रखने मे मदद मिलती है, तनाव कम होता है और मोटापा नियत्रित होता है। इसके साथ ही व्यक्ति का रक्तसचार सुचारू रूप से सचालित होता है, जिसका प्रभाव तन ही नही बल्कि मन पर भी पडता है।

जीवन-शैली और बीमारियाँ : आज जीवन–शैली से सबधित रोग जैसे कोरोनरी धमनी (आर्टरी) रोग, मोटापा और हाई ब्लड प्रेशर तेजी से बढ रहे है। ऐसी स्थिति मे योग आधारित जीवन–शैली की मदद से इन रोगो पर काबू पाया जा सकता है। कुछ शोधो से पता चला है कि शवासन हाई ब्लड प्रेशर के इलाज मे सहायक है। एक और अध्ययन के अनुसार योग पर आधारित जीवन–शैली पर अमर कर केवल दो महीने मे ब्लडप्रेशर मे कमी आ सकती है। मोटापा अपने आप मे कोरोनरी धमनी रोग के लिए खतरे का कारण है, लेकिन अध्ययनो से पता चला है कि योग अभ्यास के एक वर्ष के बाद शरीर के वजन को घटाने और हृदय की क्षमता बढाने मे मदद मिलती है। योग की मदद से एचडीएल को छोड़कर सभी लिपिड मापदडो मे कमी लाई जा सकती है। इस प्रकार योग पर आधारित जीवन–शैली से कोरोनरी धमनी की बीमारी से बचाव सम्भव है।

डायबिटीज से बचाव : मौजूदा समय मे मधुमेह या डायबिटीज एक स्वास्थ्य समस्या बन चुका है। दुनिया भर मे सबसे ज्यादा मधुमेह रोगी भारत मे ही है। कई अध्ययनो से पता चला है कि योग मधुमेह के रोगियो के लिए भी लाभकारी है। योग शरीर की हर कोशिका को प्रभावित करता है। योग अभ्यास करने वाले व्यक्ति का दृष्टिकोण सकारात्मक होता है और वह उद्देश्यपूर्ण और स्वस्थ जीवन व्यतीत करता है। निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि योग के कई मानसिक लाभ है। जैसे स्वास्थ्य मे सुधार, एकाग्रता का बढना, आत्मविश्वास मे वृद्धि और जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण आदि।

योग के साथ व्यायाम करें या नही : अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन ने सुझाया है कि नियमित व्यायाम करने के साथ–साथ योग भी करना चाहिए। इसे नियमित व्यायाम का पूरक नही समझा जाना चाहिए बल्कि तेजी से चलने और दौड़ने जैसे कार्डियो–वैस्कुलर व्यायामो के साथ रोजाना करना चाहिए।

कितनी देर योग करना चाहिए : ज्यादातर विशेषज्ञो का सुझाव है कि हर दिन कम से कम १० से ५१ मिनट तक योग अवश्य करे। अगर आपको कोई स्वास्थ्य सबधी दिक्कत है या आप दिल के मरीज है तो आप योग शुरू करने से पहले अपने डॉक्टर से सपर्क करे। स्वस्थ लोगो के लिए कम से कम ३० मिनट से ४५ मिनट तक योग पर्याप्त माना जाता है। विभिन्न योगासनो के अलावा अनुलोम विलोम और कपालभाति आदि प्राणायाम शामिल है, लेकिन गर्भवती महिलाओ को कपालभाति नही करना चाहिए।

इस बात का भी दें विशेष ध्यान : अगर आप हृदय से सबधित किसी समस्या से पीड़ित है तो इस मौसम मे सुबह की सैर और व्यायाम के दौरान अपने आपको पूरा ढक कर जाना चाहिए। इस मौसम मे सर्दी के कारण धमनियाँ सिकुड जाती है और खून गाढा हो जाता है। इस वजह से ब्लड क्लॉट बढने की सभावना बढ जाती है। ऐसी स्थिति मे हार्ट अटैक और स्ट्रोक होने की आशकाएं बढ जाती है। ब्लड प्रेशर के मरीज अपनी दवाएं लगातार ले।

साभार नई सदी पॉइन्ट

मानसिक तनाव

✍ वैद्य कृष्णलाल कालड़ा

मानसिक अवसाद शारीरिक शक्ति को हानि पहुँचाता है। उत्साहहीन होकर थका–थका–सा प्रायः शरारती तत्वो का सहारा लेकर अपराध व शोषण की भावना लिये रहता है।

भूख तक मारी जाती है, बेचैनी व घबराहट का बढना, शारीरिक कमजोरी, एकाग्रता की कमी, उदासीनता, निर्णय लेने की शक्ति मे कमी दिखाई देती है।

भोजन मे अधिक कार्बोहाइड्रेट (अनाज, शक्कर, कॉफी, चाय, चॉकलेट) व सब्जियो की कम मात्रा के कारण फेफड़ो व हृदय की पीड़ा होती है। ऑक्सीजन कम मिलने से दूषित वायु बढ जाती है। असाधारण रूप से मानसिक अवसाद बढ जाता है। शरीर मे कैल्शियम की कमी हो जाती है तो मधुमेह और यकृत की कमजोरी से मानसिक अवसाद बन जाता है।

जो लोग अनियमित भोजन करते है तो पाचन सम्बन्धित विकार बन जाता है, शरीर मे चर्बी बढ जाती है जो दिमाग मे अवसाद बना देती है।

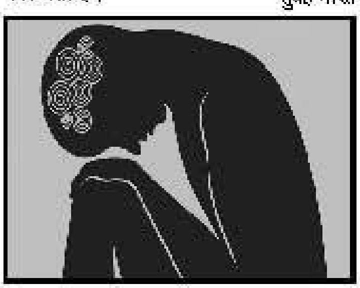

जो लोग अधिक दवाये लेते है उनके शरीर मे विटामिन तथा खनिज पदार्थों का दोषपूर्ण प्रभाव पड़ता है और मानसिक अवसाद बन जाता है।

भोजन नियमित करे, निश्चिन्त होकर भोजन करे। दाल रोटी कम, हरी सब्जियाँ सेवन कर सुबह शाम नगे पाँव आधा घटे तक टहले।

श्वासन, प्राणायाम करे, हरियाली वाले पार्क मे जाकर बैठे। रात के भोजन मे हरी सब्जियाँ, सलाद व अकुरित अनाज व दूध ले।

कॉफी, चाय, शराब, चॉकलेट, ठडे पेय, शक्कर, खाद्य रग, चावल, मसालो का प्रयोग बिलकुल न करे। सुबह नाश्ते मे दूध, फल, बिस्कुट ले, सारस्वतारिष्ट के दो–दो चम्मच समान जल मिलाकर भोजन के बाद ले। दिन के भोजन मे उबली सब्जियाँ, रोटी तथा मट्ठा ले।

स्मरण शक्ति की कमजोरी

मुलहटी की जड का चूर्ण आधा ग्राम एक गिलास मट्ठे मे मिलाकर पीने से मस्तिष्क की कमजोरी दूर हो जाती है।

पिसी काली मिर्च पाँच ग्राम, मिश्री पिसी बारह ग्राम और मक्खन एक चम्मच तीनो को मिलाकर रोजाना ५१ दिन दूध के साथ सेवन करे।

एक चम्मच शख पुष्पी चूर्ण मिश्री मिले दूध के साथ गर्मियो मे पीते रहने से दिमाग तेज होता है।

एक गिलास दूध मे रात की भीगी हुई सात बादाम गिरी पीसकर उबाले उसमे मीठा डालकर जितना गर्म पी सके पी ले। दो माह तक पीने से मानसिक कमजोरी दूर होती है।

एचआईवी रोगियों को हार्ट अटैक का ज्यादा खतरा

सामान्य लोगों की तुलना में एचआईवी रोगियों में हार्ट अटैक का गंभीर खतरा रहता है। नए शोध में आगाह किया गया है कि ऐसे रोगियों में दिल का दौरा पड़ने की दो गुनी ज्यादा आशंका रहती है। शोधकर्ताओं ने बताया कि आकलन करने की मौजूदा विधियों में एचआईवी पीड़ितों में दिल की बीमारी के खतरे को कमतर आंका गया है। शोध में पाया गया कि ऐसे लोगों के हृदय रोग की चपेट में जाने की डेढ़ से दो गुना ज्यादा आशंका रहती है। अमेरिका की नार्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता मैथ्यू फेनस्टेन ने कहा, पहले के अनुमान की अपेक्षा एचआईवी पीड़ित में हार्ट अटैक का ५० फीसदी ज्यादा खतरा होने का आकलन है। इस खतरे का सटीक अनुमान लगने से रोगियों को उपचार में मदद मिलती है। इससे उनको हार्ट अटैक या स्ट्रोक के खतरे से बचाया जा सकता है।

विज्ञान व धर्म की कसौटी पर गाय

✍ डॉ० अ० कीर्तिवर्धन

अमरीका के कृषि विभाग द्वारा एक पुस्तक Cow is Wonderful Laboratory अर्थात गाय एक अद्भुत प्रयोगशाला है, जारी की गई है। इस पुस्तक की चर्चा करने का उद्देश्य उन विद्वान लोगों को आइना दिखाने का प्रयास है जो भारतीय धर्म ग्रंथों, शास्त्रों एवं प्रचलित मान्यताओं का विरोध करते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार सभी जीव–जन्तुओं तथा दुग्धधारी पशुओं में केवल गाय ही एक ऐसा पशु है जिसकी १८० फुट लम्बी आँत होती है। यह गाय द्वारा खाए गए भोजन को पचाने में सहायक होती है। गाय की रीढ़ की हड्डी के भीतर सूर्यकेतु नामक नाड़ी होती है जिस पर सूर्य की किरण के स्पर्श से स्वर्ण तत्त्व का निर्माण होता है। गाय के एक क्विंटल (१०० किलोग्राम) दूध में एक माशा स्वर्ण पाया जाता है। गाय के दूध व घी का रंग पीला होने का भी यही कारण है। यह पीलापन कैरोटीन तत्त्व के कारण होता है। कैरोटीन तत्त्व की शरीरर में कमी होने पर ही मुख, फेफड़े तथा मूत्राशय में कैंसर होने के अवसर ज्यादा होते हैं।

सींग एंटीना : वैज्ञानिकों के शोध से यह भी पता लगा कि भैंस के दूध को गर्म करने पर पौष्टिक तत्त्व खत्म हो जाते हैं, जबकि गाय के दूध को गर्म करने पर ऐसा नहीं होता।

वैज्ञानिकों ने गाय के सींगों का आकार पिरामिड की तरह होने के कारणों पर भी शोध किया और पाया कि गाय के सींग शक्तिशाली एंटीना की तरह काम करते हैं और इनकी मदद से गाय सभी आकाशीय ऊर्जाओं को संचित कर लेती है और वही ऊर्जा हमें गौमूत्र, दूध और गोबर के द्वारा प्राप्त होती है। इतना ही नहीं शोध से यह भी पता चलता है कि गौमूत्र में कारबोलिक एसिड होता है जो कि कीटाणुनाशक होता है तथा शुद्धता एवं स्वच्छता बढ़ाता है। इसके अलावा भी अनेक परीक्षणों से पता चला है कि गौमूत्र में नाइट्रोजन, फास्फेट, यूरिक एसिड, पोटेशियम, सोडियम तथा लैक्टोज आदि तत्त्व होते हैं जो मनुष्य के शरीर को हृष्ट–पुष्ट बनाते हैं। गाय के गोबर तथा मूत्र को मिलाने से प्रोपलीन ऑक्साइड गैस बनती है जो बरसात लाने में सहायक मानी जाती है और एक दूसरी गैस इथलीन ऑक्साइड भी पैदा होती है जो ऑपरेशन थियेटर में काम आती है।

कैंसर रोधी गो-घृत : नेशनल रिसर्च इंस्टीट्यूट, करनाल (हरियाणा) से प्रकाशित एक आलेख में गाय के घी का वैज्ञानिक विश्लेषण बताया गया है, जिसके अनुसार इस घी में वैक्सीन एसिड, ब्यूटिक एसिड, बीटा कैरोटीन जैसे तत्त्व पाये जाते हैं जो शरीर में पैदा होने वाले कैंसरीय तत्त्वों से लड़ने की क्षमता रखते हैं। वैज्ञानिकों द्वारा यह भी माना गया कि गाय के १० ग्राम घी को दीपक में जलाने, गोबर के जलते उपलों पर डालने से लगभग एक टन प्राण वायु उत्पन्न होती है तथा उससे वायुमंडल में एटमिक रेडिएशन का प्रभाव कम हो जाता है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण भोपाल में १९८४ में यूनियन कार्बाइड कारखाने से गैर रिसाव के समय देखने को मिला। जिन घरों में गाय के गोबर, मूत्र, दूध व घी का प्रयोग होता था वहाँ गैस का प्रभाव कम पाया गया था।

विकिरण रोधी : रशियन वैज्ञानिकों द्वारा भी अपने शोध में पाया है कि गाय के दूध और घी में स्ट्रोंशियन नामक तत्त्व है जो अणु विकिरण का प्रतिरोधक है। गाय के दूध में सेरीब्रोसाउ तत्त्व है जो बुद्धि के विकास में सहायक है। गाय का दूध शीतल होने के कारण पित्त विकार, अल्सर, एसिडिटी तथा दाह रोगों में लाभदायक, सुपाच्य, माताओं, दुर्बल, वृद्ध, बीमार व बच्चों के लिए गुणकारी है। जलोदर नामक बीमारी से ग्रस्त व्यक्ति के लिए पानी पीना सख्त मना होता है मगर वह भी गाय का दूध पीकर स्वस्थ हो सकता है। अब बात करते हैं भारतीय धर्म ग्रंथों एवं शास्त्रों की जिन्हें सृष्टि का प्राचीनतम व वैज्ञानिक आधार पर प्रतिपादित माना जाता है। जिनके सिद्धांत वर्तमान वैज्ञानिक कसौटी पर भी खरे परखे हैं और जिन्हें हमारे तत्कालीन वैज्ञानिकों–ऋषि–मुनियों ने धर्म से जोड़कर हमारे बीच स्थापित किया और हमारी जीवनशैली का हिस्सा बना दिया। **नमो गोभ्यः** हमारे शास्त्रों में कहा गया है–

या लक्ष्मीः सर्वभूतानां
सर्वदेवष्ववस्थिता
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं
व्यपोहतु।।
नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः
सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्रोभ्यो
ममो नमः।।

अर्थात् जो सब प्रकार की भूति, लक्ष्मी है, जो सभी देवताओं में विद्यमान है, वह गौ रूपिणी देवी हमारे पापों को दूर करे। जो सभी प्रकार से पवित्र है, उन लक्ष्मी रूपी सुरभि कामधेनु की संतान तथा ब्रह्मपुत्री गौओं को मेरा बार–बार नमस्कार। वेदों में पृथ्वी को भी गाय रूप माना गया है। गौ के अंगों के मध्य में ब्रह्मा, ललाट में भगवान शंकर, दोनों कानों में अश्वनी कुमार, नेत्रों में चन्द्रमा और सूर्य तथा कक्ष में साध्य देवता, ग्रीवा में पार्वती, पीठ पर नक्षत्र गण, कुमुद में आकाश, गोबर में अष्टैश्वर्य सम्पन्न तथा स्तनों में जल से परिपूर्ण चारों समुद्र निवास करने की बात कही गई है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भी गाय को समृद्धि, धन–धान्य एवं सृष्टाति सृष्ट भोज्य पदार्थों की प्रदाता बताया गया है। महाभारत के 'अनुशासन पर्व' में भीष्म पितामह महाराज युधिष्ठिर को गाय का महात्म्य सुनाते हुए कहते हैं–

मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदा।

वह सभी सुखों वाली है, सभी प्राणियों की माता है।

आदिशंकराचार्य ने भी ब्रह्मोपलब्धि में गाय को सर्वोत्तम साधन माना है–

गावः पवित्रं परमं गावो
मांगल्यमुत्तमम्।
गावः स्वर्गस्य सोपानं गावो धन्याः
सनातनाः।

मोदी जी द्वारा किए गए अनुचित कार्य (अप्रैल २०१७)

१. बांग्लादेश के साथ विभिन्न विषयों पर २२ समझौते किए गए किन्तु असम सरकार द्वारा गठित ट्रिब्युनल, जिन्हें बांग्लादेशी घोषित करेगा– क्या बांग्लादेशी सरकार उन्हें वापिस लेगी? यदि नहीं तो क्यों? इस विषय पर कोई चर्चा नहीं हुई।

२. यह ट्रिब्युनल अभी तक ४०० को बांग्लादेशी घोषित कर चुका है। समाचार पत्रों में यह जानकारी नहीं दी गई है कि इनकी वापसी कब और कैसे होगी? इनकी संख्या कई लाख तक होगी। अतः मोदी को शेख हसीना से इनकी पुर्नवापसी प्रक्रिया पर भी समझौता अवश्य करना चाहिए था जो नहीं किया गया।

३. १९४७ में सीमा आयोग ने चटगाँव पहाड़ी क्षेत्रों को, मजबूरी में, पूर्वी पाकिस्तान (१९७१ से बांग्लादेश) को इस शर्त के साथ दिया था कि उन्हें स्वायत्त शासन का दर्जा देना होगा क्योंकि वहाँ बौद्ध ९८ प्रतिशत थे। यह क्षेत्र समुद्र से मिला हुआ था इसलिए इसे भारत को नहीं दिया गया।

४. एक अनुमान के अनुसार अब वहाँ बौद्ध ५० प्रतिशत ही हैं। भारत सरकार की नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि वह चटगावँ के बौद्धों का ध्यान रखें। पिछले ६६ वर्षों में भारत सरकार ने अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाई है। एक समझौता इन पर भी होना चाहिए था। बौद्ध संगठनों को भी सक्रियता दर्शानी चाहिए।

५. म्यांमार की बौद्ध धर्मी सरकार ने उपद्रवी–आक्रामक सोच वाले हजारों रोहिंग्या मुस्लिम परिवारों को जबर्दस्ती देश से निकाल दिया था। वे समुद्र के रास्ते बांग्लादेश आ गए। भारत सरकार की उदार नीति के कारण काफी परिवार पश्चिम बंगाल आ गए। हरियाणा के मुस्लिम संगठनों ने काफी परिवार मेवात में बुला लिए। नौकरशाही –खुफिया एजेन्सियों सहित सुरक्षा बलों की चूक से ६००० रोहिंग्या मुस्लिम बर्मी जम्मू में भी रह रहे हैं।

६. मोदी सरकार इनके साथ कांग्रेसी संस्कृति के अनुसार व्यवहार करने जा रही है। उसने निश्चय किया है कि वह इन्हें कम आबादी वाले छत्तीसगढ़ राज्य के कुछ शहरों में बसा देगी। वह न तो इन्हें वापिस भेजेगी और ही अप्रत्यक्ष रूप से दबाव डालकर हिन्दू बनाएगी।

७. कांग्रेस ने कई वर्ष पूर्व व्यापारिक क्षेत्र में, एक तरफा कार्रवाई करके, पाकिस्तान को मोस्ट फेवर्ड नेशन का दर्जा दिया था जबकि पाकिस्तान ने वह दर्जा भारत को नहीं दिया है। ऐसी आशा थी कि मोदी सरकार वह दर्जा वापिस ले लेगी लेकिन मोदी ने कुछ नहीं किया। यह लिखते हुए खेद हो रहा है। मोदी तो कांग्रेस के दिखाए रास्ते पर ही चल रहे हैं।

८. छत्तीसगढ़ में नक्सलियों को नष्ट करने के लिए महत्वपूर्ण बड़ी सड़क बनाई जा रही है जिसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी सी० आर० पी० को सौंप दी गई जबकि जिम्मेदारी राज्य पुलिस तथा सी० आर० पी० को संयुक्त रूप से देनी चाहिए थी। इस चूक–गलती का लाभ उठाते हुए नक्सलियों ने अप्रैल में ३७ जवानों को मार दिया।

९. पूर्व अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री नजमा हेपतुल्ला ने मोदी को सुझाव दिया था कि अल्पसंख्यक मंत्रालय समाप्त कर दिया जाए क्योंकि "सब का साथ–सब का विकास" में अल्पसंख्यक भी आते हैं इसलिए इस मंत्रालय की आवश्यकता नहीं है।
–चूंकि मोदी अब कांग्रेस के रास्ते पर चल रहे हैं इसलिए उन्होंने नजमा का उत्तम सुझाव स्वीकार नहीं किया।

१०. कश्मीर घाटी में हजारों छात्र–छात्राएं सुरक्षा बलों पर जबरदस्त पत्थर बरसा रहे हैं और असामान्य स्थिति बनी हुई है फिर भी सुरक्षा बलों से नरमी की व्यवहार करने के लिए कहा जा रहा है।
–ऐसी दशा में राज्य सरकार को भंग कर देना चाहिए और किसी सख्त सोच वाले पूर्व सैनिक को राज्यपाल बनाकर राज्य में राज्यपाल शासन लगा देना चाहिए। वर्तमान राज्यपाल भी असफल सिद्ध रहे हैं।

११. मोदी सरकार रेल सेवा और डाक सेवा में पूर्ण रूप से विफल सिद्ध हुई है।

आई० डी० गुलाटी

कश्मीर घाटी में अलगाववादियों के समर्थक

डॉ० कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

कश्मीर घाटी में पिछले दो तीन दशकों से कुछ लोग पाकिस्तान व अन्य विदेशी शक्तियों की सहायता से भारत विरोधी आन्दोलन चला रहे हैं। इनकी सहायता करने वाले समूह दो हिस्सों में बाँटे जा सकते हैं। पहला समूह सीधे बन्दूक के बल पर भारत को परास्त करना चाहता है। इसलिए वह हथियारों के बल पर स्थानीय लोगों को डराता धमकाता है। जो उनके साथ नहीं चलता उन्हें गोली मार देता है। इससे आम जनता में दहशत फैलती है। हाथ में बन्दूक लेकर घूमने वाला यह समूह सुरक्षा बलों पर भी आक्रमण करता है। इसका आम लोगों पर गहरा मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। उसे लगता है बन्दूक वाला यह समूह, सुरक्षा बलों से डरने की बात तो दूर, उनसे दो दो हाथ कर रहा है, तो सुरक्षा बल हमारी क्या रक्षा करेंगे? इस प्रकार आम जनता इन बन्दूक वाले दहशतगर्दो के आगे असहाय अनुभव करती है। इसके बावजूद पर्दे के पीछे से दहशतगर्दो को संचालित करने वाली ताकतें जानती हैं कि बन्दूक लेकर घूमने वाले इन छोटे छोटे गिरोहों के बल पर घाटी में कश्मीरियों को परास्त नहीं किया जा सकता। कुछ देर के लिए डराया तो जा सकता है। कश्मीर घाटी में जो भारत का विरोध कर रहे हैं, वह अल्पसंख्या में हैं, लेकिन मुखर हैं क्योंकि उन्हें दहशतगर्दो की बंदूक का समर्थन प्राप्त है। बहुसंख्या दहशतगर्दो और दहशतगर्दी के खिलाफ है लेकिन वह साईलैंट मायजोरिटी है, इसलिए दिखाई नहीं देती। घाटी में जब आतंकवादी आम कश्मीरियों को चुनाव में हिस्सा न लेने की चेतावनी देते हैं तो उसका उद्देश्य साफ है कि वे बन्दूक के बल पर बहुसंख्यक कश्मीरियों को डराते हैं। बन्दूक की गोली दूर से ही सबको सुनाई देती है लेकिन उसका मौन विरोध न तो किसी को सुनाई दे सकता है और न ही दिखाई दे सकता है। परन्तु बन्दूक की गोली से कश्मीर घाटी को भारत से तोड़ा नहीं जा सकता, इतना तो दहशतगर्दो और अलगाववादियों को पर्दे के पीछे से संचालित करने वाले भी जानते हैं। उनके अभियान को किसी न किसी रुप में सिविल सोसायटी का भी समर्थन चाहिए। उस समर्थन के कारण पूरा आन्दोलन आतंकवादी आन्दोलन न होकर जन आन्दोलन का आभास देने लगता है।

जाने अनजाने में देश में सिविल सोसायटी के नाम पर ऐसे कुछ लोग सक्रिय हो जाते हैं जिनकी हरकतों से आतंकवादियों को लाभ पहुँचता है और घाटी में उनका विरोध करने वाले बहुसंख्यक कश्मीरियों का मनोबल टूटता है। सुरक्षाबलों में निराशा फैलती है। कश्मीर घाटी में भी यही कुछ हो रहा है। घाटी के अलगाववादी समूह तो खुले आम आतंकवादियों के उद्देश्यों का समर्थन करते हैं। हुर्रियत कान्फ्रेंस इसका जीता जागता उदाहरण है। यह ठीक है कि घाटी में इसकी ज्यादा पैठ नहीं है। लेकिन आतंकवादियों का संचालन करने

वाली विदेशी शक्तियों को भी चेहरे चाहिएँ, पैठ नहीं। हुर्रियत कान्फ्रेंस उनकी इस माँग की पूर्ति तो करती ही है। लेकिन कहीं न कहीं हुर्रियत कान्फ्रेंस भी आतंकवादियों की गोली के साए में की जा रही सभाओं में ही मुखर होती है। कान्फ्रेंस में जो अलग भाषा बोलने की हिम्मत करता है उसे गोली से जन्नत पहुँचा दिया जाता है। घाटी के एक जाने पहचाने मीरवायज जनाब मोहम्मद फारुक को आतंकवादियों ने इसी लिए गोली मार दी थी। और लगभग दस साल बाद उनकी कब्र पर चन्द अकीदत के फूल चढ़ाने के लिए गए अब्दुल गनी लोन की भी हत्या कर दी थी। इसलिए कहा जा सकता है कि हुर्रियत कान्फ्रेंस ऐसे लोगों का जमावड़ा है, जिसका पिछवाड़ा आतंकवादी खेमे में रहता है और उसका मुँह सिविल सोसायटी में जाकर खुलता है। सिविल सोसायटी में घूमने वाले दूसरे समूहों में एक समूह या परिवार आसानी से पहचान में आता है। यह महरूम शेख अब्दुल्ला का कुनबा है। इन समूहों की हरकतों से आम कश्मीरी को लगता है कि अलगाववादियों की ताकत बहुत बढ़ गई है और सरकार भी इनसे डरती है। जब गिलानियों और मीरवाइजों के आगे पीछे सुरक्षा बलों की गाड़ियाँ चलती हैं तो आम कश्मीरी में उनका रुआब बढ़ता है। तब बकरा पार्टी ही बाघ पार्टी दिखाई देने लगती है। इतना ही नहीं, इससे सुरक्षा बलों को लगता है कि जिन कश्मीरियों की सुरक्षा के लिए हम सीमा पर अपना खून बहा रहे हैं, वही हमें गालियां दे रहे हैं, पत्थर फेंक रहे है। तीसरा समूह उनका है जो अमेरिका में जाकर गुलाम नबी फाई के यहाँ दावत उड़ाते हैं। होटलों में दावते उड़ाने को वे सैमीनार का नाम देते हैं। इसमें भारत के पत्रकार भी शामिल होते हैं और सारे संसार के आगे चीख चीख कर कहते हैं कि कश्मीर घाटी में भारतीय सेना आम कश्मीरियों के मानवाधिकारों का हनन कर रही है। घाटी में यह बात आम कश्मीरी भी नहीं कहता। व्यक्तिगत बातचीत में वह यही कहता है कि गिलानियों ने विदेशी आतंकवादियों के साथ मिल कर घाटी को नर्क बना दिया है। लेकिन फाई के एअर टिकट पर होटल में उसी के पैसे से मुर्ग मुस्ललम हलाल करने वाले भारतीय सैमीनेरियन कश्मीर को कश्मीरियों से भी ज्यादा जान लेने का दावा करते हुए वही भाषा बोलते हैं जो उसी दावतनुमा सैमीनार में पाकिस्तान के छद्म बुद्धिजीवी बोलते हैं। यहाँ यह बताने की जरुरत नहीं कि इन आयोजनों का तमाम खर्चा इस्लामाबाद देता है।

लेकिन इन तमाम विपरीत परिस्थितियों में भी न तो आम कश्मीरी ने और न ही सुरक्षा बलों ने हिम्मत हारी। इस लिए अब चौथी पार्टी मैदान में उतरी है। यह पार्टी सोनिया कांग्रेस की है, जिसके ५५० की लोक सभा में फकत ४४ सदस्य हैं। इस चौथी पार्टी ने बिना लाग लपेट के सीधा सीधा हमला बोला। यह पार्टी जानती है कि यदि शेष पृष्ठ 10 पर

'स्वधर्म का विधान'

देखा जाए तो कोई भी व्यक्ति जो अपने मूल तत्व को नहीं जानता वह अपने स्वधर्म कर्म–ज्ञान से भी वंचित रहता है। मूल विस्मृति में व्यक्ति अज्ञान है और विश्व में हो रहे अथवा होने वाले गुण–दोषों का जनक होता है। मोह आवरण एवं उसमें उत्पन्न भ्रांति के ये घेरे हैं, अज्ञान धारणाएँ हैं। क्योंकि जो आया है उसे एक दिन जाना भी होगा किन्तु जो स्वधर्म निभाकर जाये वह स्थायी सुख शान्तिदायक ज्ञानी है। जीवन की प्रत्येक अवस्था व घटना को भोग रूप में देखें तो हम मन से, शरीर से जीर्ण–क्षीण होते चले जायेंगे परन्तु यदि हम इनको मात्र गति रूप, बहते हुए विकार को दृष्टा भाव से देखें तो दुखदाई विकार स्वतः ही बह जायेंगे। इसलिए जीवन की प्रत्येक अवस्था में भोग को प्रसाद समझकर ग्रहण कराने से व्याधि से दूर रहेंगे, इच्छा को तृष्णा में न बदलने पर शान्ति होगी एवं तिमिर की कालिमा अप्रभावी बनेगी और हमारा सारा तप–ताप में परिणित नहीं होगा। जिस प्रकार आँधी का प्रभाव घर में बैठकर न्यूना–सा हो, व्यक्ति व्याकुल नहीं होता है, उसी प्रकार स्वधर्म पालन में सन्ताप भी तप में बदल जाता है तथा जीवन सफलता की ओर अग्रसर होता है। अगर समझें तो जब वृक्ष के पत्ते पतझड़ में गिर जाते हैं तो पौधे लय नहीं होते, जब तक मूल सुरक्षित पौधा भी संरक्षित है। यही कारण है कि मूल स्थिति में मृत्यु भासित नहीं होती है। जो शरीर जैसे कर्म करेगा उसको उसी कार्य के आधार पर ही नई योनि प्राप्त होगी। यदि पतन दृष्टि का व्यक्ति है तो अनुभव कराने हेतु उसको भिखारी, विकलांग, नेत्रहीन, अभावग्रस्त आदि अवस्था में जन्म लेना पड़ेगा। परन्तु स्वधर्मी व्यक्ति का जन्म उसके पिछले जन्म के स्तर से ऊँचा जन्म मिलेगा। जिस प्रकार प्रकृति में आम के वृक्ष पर अमरूद नहीं उगाये जा सकते हैं उसी प्रकार एक विशिष्ट योगि महाराज की जीवात्मा महारज के रूप में ही जन्म धारण करेगी। अधर्मी व्यक्ति का जन्म ऐसे स्थान पर रहेगा जहाँ अवरोध, असफलता, सन्ताप, दुःख आदि देकर उसके स्वरूप को शुद्ध किया जा सकता है।

आज के परिवेश में प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि मैं कम काम करूँ और पूरा पैसा मिले, यहाँ तक की हड़ताल पर रहूँ, कई महीने तक फिर भी पूरा पैसा मिले। यह इच्छा फल आसक्ति है, परमात्मा का नियम है जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। यह भी देखने में आता है कि एक विद्यार्थी कम पढ़ता है फिर भी उसकी पास होने की इच्छा रहती है और फेल होने पर दुःख होता है। कोई व्यक्ति कम्पटीशन में बैठता है जो स्वधर्म आधार नहीं है, पुरुषार्थ करने पर भी सफल नहीं होता है। ये सारी व्यवस्थाएँ अधर्म पर आधारित हैं क्योंकि हमने अपने कर्म में भगवान की पूजा नहीं देखी है और फल की इच्छा की सफलता रूपी आसक्ति जमा ली। प्रत्येक व्यक्ति को भोग का स्वाद, भौतिक संसाधान का जमाव, वासनाओं का अनुभव सुन्दर लगता है, जो कुछ समय पश्चात् असक्ति युक्त धारा में बंधकर जीवन कष्टकारक, अशान्तिदायक हो जाता है। इस प्रकार भगवान ने स्वधर्म करने और न करने के परिणाम बताये हैं। लोक एवं परलोक भी धर्म मार्ग पर चलकर अपने वर्तमान के जीवन में निर्माण करते हुए अगला जीवन भी–सुख–समृद्धि से भरता चला जायेगा। यही स्वधर्म का विधान है जो धर्म के पालन में तुम्हारा पिता, बेटा, गुरू क्यों न हो तो उसे भी रौंद कर आगे चलते चले जाओ। ममता, मोह के कारण व्यक्ति स्वधर्म को भूल कर अपने सम्बन्धियों एवं परिवार से जुड़कर समस्त आचरण नष्ट कर देता है। लोभ और मद के कारण जहाँ है वहाँ से उठता नहीं है और लोगों को गिराने का प्रयास करता है। मैं और मेरे अहंकार में खोकर अपने स्वार्थ हितों को परा करने के लिए स्वधर्म भूल जाता है। व्यक्ति भय और भ्रम से ग्रसित होकर अपने मार्ग में भटक जाता है और दुष्कर्म करने को पीछे से आघात करता है। सच्चाई से भागने पर अपने मनोबल गिरा देता है और संग दोष के कारण अपना ही शत्रु बन जाता है। वही शक्तिशाली मानव अपने स्वधर्म का पालन करके बाधाओं पर विजय प्राप्त कर जीवन यापन करता है। अनेकों व्यक्ति कुछ प्राप्त करने की लालसा लिये जीवन यात्रा करते हैं और यह जानते हुए भी कि 'होगा वही जो राम रचि राखा' अनेक प्रकार के मोमत्व हेतु प्रयास करते हैं। कभी तांत्रिक की शरण में, कभी ज्योतिषी से विचार करके, मान्यताओं फँसते हैं। रेशम के कीड़े की तरह जो आग से डरता है। अपने चारों ओर रेशम का खोल बनाता है और उसी रेशम के खोल में स्वच्छ वायु न पाने के कारण देह त्याग कर देता है। इस प्रकार भोगशक्ति की गति व्यक्ति को असंतुलित कर देती है और नाना प्रकार के संसाधन बनाने में अपनी बुद्धि को गवां कर जगत में फँसता जाता है। तात्पर्य से ही है कि संसार में ऐसे विचरण करो जैसे कमल का फूल– कि कीचड़ में खिलने के पश्चात् भी इतना स्वच्छ और निर्मल होता है कि भगवान को अर्पण किया जाता है उसी प्रकार स्वधर्म वो कुंजी है जो व्यक्ति के जीवन को सरल व कुन्दन बना देती है।

रश्मि अग्रवाल

जम्मू कश्मीर के दो चेहरे, जीप के बोनट पर फारुक अहमद धर और गाहचूक जेल में बाबा जान

डॉ० कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

(पिछले अंक का शेष)

लेकिन गहरी जाँच का विषय यह होना चाहिए कि फारुख और उमर आतंकवादियों का समर्थन करने के लिए कश्मीरी नौजवानों में अपना यह अभियान कब से चला रहे हैं? क्योंकि पुलिस की रपट है कि पिछले कुछ अरसे से अस्सी के लगभग कश्मीरी युवक आतंकवादियों के साथ मिल गए हैं। फारुक अब्दुल्ला खुद कह रहे हैं कि पत्थर फेंकने वाले और बन्दूक चलाने वाले इन कश्मीरी नौजवानों ने न सांसद बनना है और न ही विधायक, तो फिर क्या वे इस बात का खुलासा करेंगे कि इनका प्रयोग वे खुद सांसद बनने के लिए क्यों कर रहे हैं? नैशनल कान्फ्रेंस की इन आतंकवादी नौजवानों से क्या कैमिस्ट्री है? इस पृष्ठभूमि में अप्रेल की घटना को बेहतर और सही तरीकेध से समझा जा सकता है।

भारतीय सेना के मेजर गोगोई ने कश्मीर घाटी के बडगाम जिला में पिछले दिनों हुए उपचुनाव में एक मतदान केन्द्र पर पत्थरबाजों को हल्लाशेरी दे रहे किसी फारुख अहमद धर को जीप के बोनट पर बाँध कर कितने ही लोगों को मरने से बचा लिया था। हजारों की संख्या में जो लोग उस दिन मतदान केन्द्र को घेर कर पत्थरबाजी कर रहे थे, वे भी व्यक्तिगत बातचीत में कह रहे हैं कि मेजर गोगोई ने ऐसी तरकीब निकाली कि घिरे हुए सभी कर्मचारियों और सुरक्षा बल के जवानों को बचा कर ले गया। कश्मीर में लाशों की राजनीति करने वाले गोगोई की इस कारगुजारी को पचा नहीं पा रहे, इसलिए वे उसे गालियाँ दे रहे हैं। स्वभाविक ही इसमें गिलानियों का कुनबा, मीरवाइजों की जमात शामिल है। अब्दुल्ला परिवार (महरुम शेख अब्दुल्ला के कुनबे के लोग) भी इसमें शामिल है। यह उसकी राजनैतिक रणनीति का हिस्सा है, जिसमें लाशें भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। इसलिए वे मेजर गोगोई को इतनी आसानी से कैसे सफल होने दे सकते थे। तुरन्त अलगाववादियों का सोशल मीडिया को हथियार के तौर पर प्रयोग करने वाला ब्रिगेड सक्रिय हो गया। आधुनिक तकनीक की विशेषता है कि इस काम के लिए पत्थरफेंकने वाली पलटन की तरह आगे आने नहीं पडता। बोनट पर बँधे फारुख अहमद धर की तस्वीर, वायरल कर दी गई। पहली पलटन पत्थरबाजों की मैदान में उतरी थी। दूसरी पलटन सोशल मीडिया वालों की उतरी थी। उसने अपना काम कर दिखाया था। अब तुरन्त तीसरी पलटन मानवाधिकारवादियों की मैदान में उतरी। यह बुद्धिजीवियों की पलटन है। छत्तीसगढ़ के जंगलों में माओवादियों से लेकर जम्मू कश्मीर में काम कर रहे आतंकवादियों तक सभी के मानवाधिकारों की रक्षा करने से लेकर उनके कुकर्तयों की सफाई देने और उसके औचित्य को सही ठहराने की भारी भरकम जिम्मेदारी इसी पलटन के जिम्मे है। पत्थरबाजों की पलटन को अपना काम करते हुए कुछ सीमा तक खतरा भी उठाना पड़ता है। वे सुरक्षा बलों की गोली का शिकार हो सकते हैं लेकिन मानवाधिकार ब्रिगेड को ऐसा कोई खतरा नहीं होता। क्योंकि वे अपना काम सुरक्षित स्थान और सुविधासम्पन्न वातावरण में ही करते हैं। इस काम के लिए उन्हें स्मृति चिन्ह और पुष्प गुच्छ भेंट किए जाते हैं। इस ब्रिगेड के महारथी अपने इलाके में बहुत ही ऊँची नस्ल के पहुँचे हुए बुद्धिजीवी कहलाते हैं। इस ब्रिगेड ने अपनी रणनीति से मेजर गोगोई को घेर लिया। उस पर पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज कर दी। मानवाधिकारवादियों के समूह गोगोई के लिए सजा की माँग करने लगे। उसने नरसंहार को होने से बचा लिया, यह बात गौण हो गई। बोनट पर बँधे अहमद धर को कितनी मानसिक वेदना हुई, इसका लेखा जोखा किया जाने लगा। बोनट पर कुछ देर बैठे रहने से उसके किस किस मानवाधिकार को चोट पहुँची है, कौन सा अधिकार कितना डैमेज हो चुका है, इसका एक्स रे शुरु हो गया। शायद फारुख अहमद धर को भी इस बात का पता नहीं होगा कि उसके किस किस अधिकार को कितनी चोट पहुँच चुकी है। इन सब बातों के लिए मेजर गोगोई को जिम्मेदार ठहरा दिया गया। उसके एवज में गोगोई को दंडित करने की माँगें उठाई जाने लगी। पत्थरबाज ब्रिगेड की असफलता को मानवाधिकार ब्रिगेड सफलता में बदलना चाहती थी। उधर नैशनल कान्फ्रेंस ने अपनी भूमिका सँभाली। वैसे तो कान्फ्रेंस शेख अब्दुल्ला के वक्त से ही यह दोहरी भूमिका जी रहा है। फारुक अब्दुल्ला ने केवल उसका नया संस्करण प्रस्तुत किया है। इस नई रणनीति का लाभ भी है। नैशनल कान्फ्रेंस का कार्यकर्ता अपनी पार्टी को वोट डालने वाले लोगों को तो मतदान केन्द्र तक आने की अनुमति देगा लेकिन जब दूसरे दलों के लोग वोट डालने के लिए आएँगे तो वही कार्यकर्ता पत्थर फेंकों की पलटन बन कर उनको रोकेगा और आजादी चिल्लाएगा। एक पंथ दो काज। जितना कम मतदान होगा नैशनल कान्फ्रेंस को उतना ही लाभ होगा। सफल मैनेजमेंट की यही खूबी होती है। सभी अंग प्रत्यंग अपना अपना काम इस प्रकार संभालते हैं कि एक दूसरे की सहायता प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रुप से होती रहे। कोई ब्रिगेड पर्दे के आगे आकर अपना मोर्चा संभालती है और कोई ब्रिगेड पर्दे के पीछे से अपना मोर्चा संभालती है। लेकिन तालमेल बना रहता है। यह तालमेल का परिणाम था कि अलगाव वादी और नैशनल कान्फ्रेंस के लोग अपने अपने इलाकों में सड़कों पर चिल्ला चिल्ला कर गोगोई के लिए फाँसी की माँग करने लगे। लेकिन इस पूरी रणनीति में एक पलीता लग गया। इसकी शंका शायद किसी को नहीं थी। न पत्थर ब्रिगेड को, न सोशल मीडिया ब्रिगेड को और न ही मानवाधिकार ब्रिगेड को। नैशनल कान्फ्रेंस को तो बिल्कुल ही नहीं क्योंकि श्रीनगर की इस लोकसभा की सीट के लिए कांग्रेस और नैशनल कान्फ्रेंस मिल कर चुनाव लड़ रहे थे। यह पलीता लगाया था पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरेन्द्र सिंह ने। उन्होंने अखबारों में बाकायदा एक लम्बा लेख लिख कर मेजर गोगोई के काम की सराहना ही नहीं की बल्कि यह भी कहा कि यदि उसके स्थान पर मैं होता तो मैं भी यही करता। इससे भी आगे उन्होंने कहा कि आप जम्मू कश्मीर में सेना के हाथ पीठ के पीछे बाँध कर उसे आतंकवादियों से लड़ने के लिए नहीं कह सकते। कैप्टन के लेख से मानवाधिकारवादियों की ब्रिगेड में खलबली मच गई। इस इलाके से भी बम्बबारी हो सकती है, इसके बारे में तो रणनीति बनाते समय सोचा ही नहीं था। इस नुकसान को पूरा करने के लिए दूसरे कैम्प के लिए भी किसी बड़े रुतबे के आदमी को मैदान में उतारना जरुरी हो गया। कैप्टन का मुकाबला हुर्रियत कान्फ्रेंस के नेता सैयद अहमद शाह गिलानी के बयानों से नहीं हो सकता था। न ही यासिन मलिक यह काम कर सकते थे। इसके लिए तो किसी बड़ी कद काठी के सेनानायक की जरुरत थी। वैसे रणनीति के तहत रुतबे के ऐसे सेनापतिओं का इतनी जल्दी पर्दाफाश नहीं किया जाता। उनको अन्त तक पर्दे के पीछे छिपा कर ही रखा जाता है। लेकिन मानवाधिकार ब्रिगेड के लिए भी आपत काल ही उपस्थित हो गया था। मरता क्या न करता। परदा उठाना पड़ा और कैप्टन को जबाव देने के लिए उमर अब्दुल्ला को मैदान में उतारा गया। पत्थर का

जबाव पत्थर। गोली का जबाव गोली। आलेख का जबाव आलेख। कैप्टन के आलेख के जबाव में उमर अब्दुल्ला का आलेख अखबारों में आया। उन्होंने अखबार में मेजर गोगोई पर गोलाबारी की और फारुख अहमद धर पर हुए अत्याचार के लिए गोगोई को जिम्मेदार ठहराया। उसके लिए गोगोई को क्या सजा दी जाए? यह कहने की जरुरत उमर अब्दुल्ला को नहीं थी क्योंकि इसकी घोषणा पार्टी ने अखबार में नहीं बल्कि कश्मीर घाटी की सड़कों पर पार्टी की विधायक शमीमा फिरदौस के नेतृत्व में प्रदर्शन के माध्यम से की थी। गोगोई को फाँसी मिलनी चाहिए। कोई और देश होता तो फारुख अहमद धर की पृष्ठभूमि की जाँच की माँग की जाती। अलगाववादियों से उसके सम्बंधों पर सवाल उठते। लेकिन यहाँ गोगोई को ही घेरा जा रहा था और अहमद को मासूम बताया जा रहा था। मतदान केन्द्र पर उस दिन गोगोई था। गोगोई का कहना है कि फारुख अहमद धर पत्थर फेंकने वालों का रिंगलीडर था और उन्हें इस काम के लिए उकसा रहा था। कायदे से तो इस साक्ष्य के आधार पर अहमद धर के खिलाफ भी प्राथमिकी दर्ज होनी चाहिए थी। जाँच होनी चाहिए। उसके बाद निर्णय होना चाहिए। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। इसके विपरीत मेजर गोगोई के खिलाफ पुलिस के पास प्राथमिकी दर्ज है। अहमद धर का कहना है कि यदि मैं पत्थर फेंकने वालों में से होता तो अपना वोट क्यों डालता? यह कोई ऐसा रहस्य नहीं है जिसकी तह तक जाने के लिए ज्यादा माथापच्ची करने की जरुरत पड़े। अपना वोट डाल दिया और दूसरे लोग वोट न डाल सकें, इसलिए बरसाओ पत्थर। यही तो वह रणनीति है जिसके तहत चुनाव का बहिष्कार करने की पद्धति अपना कर भी किसी चहेते प्रत्याशी को जिताया जाता है। फारुक अब्दुल्ला नैशनल कान्फ्रेंस वालों को स्पष्ट तो कह चुके हैं पत्थरबाज कश्मीर के नायक हैं लेकिन उन्होंने यह तो नहीं कहा कि मुझे वोट मत डालो। वोट के लिए ही तो वे चुनाव में उतरे हैं। इसलिए वोट भी डालो और पत्थर भी बरसाओ, ताकि अपना प्रत्याशी जीत जाए और दूसरे प्रत्याशी के समर्थक मतदान केन्द्र के पास भी न जा सकें। यदि अहमद धर के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज होती और साक्ष्य के लिए उसने किसे वोट डाला, यह जाँचने की भी कघनून में अनुमति होती तो शायद मामला और स्पष्ट हो जाता कि वोट वाला हाथ किसके लिए और पत्थर वाला हाथ किसके लिए। याद कीजिए शेखघ अब्दुल्ला का १९५२ में जम्मू के रणवीर सिंह पुरा में दिया गया भाषण। लगता है नैशनल कान्फ्रेंस वापिस रणवीर सिंह पुरा के युग में लौट आई है। लेकिन नैशनल कान्फ्रेंस और पाकिस्तान दोनों के ही दुर्भाग्य से दिल्ली में पंडित जवाहर लाल नेहरु या उसके वंशजों की सरकार नहीं है। यदि ऐसा होता तो शायद सचमुच मेजर गोगोई को ही सजा हो जाती।

उमर अब्दुल्ला और उनकी मानवाधिकार ब्रिगेड यह तो चिल्ला रही है कि मेजर गोगोई को, फारुख अहमद धर को जीप के बोनट पर नहीं बिठाना चाहिए था लेकिन यह नहीं बताती कि उस हालत में उसे इसके स्थान पर क्या करना चाहिए था? स्थल सेनाध्यक्ष जनरल रावत ने बिल्कुल सही प्रश्न उठाया है कि यदि सीमा पर शत्रुओं के मन में और देश के भीतर देश के खिलाफ बन्दूक उठा लेने वालों के मन में सेना का भय नहीं रहेगा तो देश का भविष्य खघ्तरे में पड़ जाएगा। बडगाम जिला में उस दिन शेष पृष्ठ 10 पर

हिन्दू अस्तित्व, संकट और समाधान

प्रो० ए०पी० सारस्वत

अब समय आ गया है कि शैतान की पार्टी वाले लोग (गैर-मुसलमान) अल्लाह की पार्टी वालों (मुसलमानों) से संयुक्त रूप से अनुरोध करें कि अल्लाह के उस हुक्म को संशोधित करें जो शैतान की पार्टी वालों की हत्या, लूट, व्याभिचार, अपहरण और सांस्कृतिक विध्वंस के लिए हैं। पैगम्बर के आदेशों और पैगम्बर के सुन्ना को बदलें जो गैर-मुसलमानों के विध्वंस के लिए मुसलमानों के आदर्श बने हुए हैं। इसके लिए अपने नियम के अनुसार फतवा जारी करें कि जेहाद युद्ध नहीं आत्मसंयम है। अल्लाह और पैगम्बर के हुक्म जो गैर-मुसलमानों से दुराचरण के लिए प्रेरित करते हैं, उन्हें निरस्त किया जाये। साथ ही मुस्लिम समुदाय के आचरण में उसको उतारा जाये। ''लड़ाई धोखेबाजी है'' के सिद्धांत का त्याग कर सभी प्रकार के व्यवहार में 'ईमानदारी' को स्थापित किया जाये।

हिन्दू धर्म

हिन्दू धर्म दुनिया का सबसे प्राचीन धर्म है और 'वेद' सबसे प्राचीन धर्मग्रन्थ। आधुनिक विज्ञानियों के अनुसार भी 'वेदों' का रचनाकाल ७००० ईस्वी पूर्व है, यानी उस समय न यहूदी धर्म था, न ईसाई, न मुस्लिम। वेदों में 'पैगम्बर' की अवधारणा नहीं है। 'वेद' मानवता, बंधुत्व, प्रकृति प्रेम, पशु–पक्षियों पर भी दया, सत्यता, न्याय, शांति, सह–अस्तित्व का संदेश देते हैं। आज जबकि समस्त विश्व 'इस्लाम' के नाम पर किये जा रहे उन्माद, खून–खराबे से पीड़ित–त्रस्त है, ऐसे में 'विश्व–शांति' हेतु 'सनातन–वैदिक–हिन्दू–भारतीय धर्म' का अवलम्बन ही विश्व–शांति का एकमात्र उपाय है। वेद के निम्न मंत्रों से यह स्पष्ट है–

''मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे'' (यजु ३६.१८) हम सब एक–दूसरे को मित्र की तरह देखें।

''सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम'' (ऋ. १०.१९१. २) हे मनुष्यो! तुम सब एक विचार के होके साथ –साथ चलो, परस्पर प्रेम से आपस में बोलो।

''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्व भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिचद् दुःखभाग्भवेत'' सुखी बसे संसार सब, दुखिया रह ना कोय।

''वसुधैव कुटुम्बकम'' पृथ्वी पर रहने वाले सभी एक परिवार हैं।

हिन्दू अस्तित्व पर संकट

हिन्दू समाज या भारत राष्ट्र के लिए बहुत ही बुरे दिन आने वाले हैं। भारत भूखण्ड को, जो आदिकाल से हिन्दू समुदाय का अपना घर रहा है, इस्लाम और ईसाइयत के हाथों अधिगृहीत किये जाने की स्थिति बन रही है। दुर्भाग्य यह है कि पूरा हिन्दू समाज ही उस भयावह दृश्य को देख सकने में अक्षम आँख वाला बना हुआ है। उदासीन, असावधान, सुषुप्त, स्वार्थान्ध और आत्मकेन्द्रित जीवन–शैली अपना लेने के कारण ८० करोड़ की हिन्दू जनसंख्या बिखरी हुई, असंगठित और शक्तिहीन बन गई है। कोई समाज जब तक संगठित नहीं होता है सशक्त नहीं बन सकता है। संगठित होने के लिए आवश्यक शर्त है– **''पूरे समाज को एक मत का होना।'' मतैक्यता से ही एकता, संगठन और फिर शक्ति का निर्माण होता है, मतभिन्नता से बिखराव होता है। आने वाले समय में इसका परिणाम बहुत भयंकर होने वाला है। हिन्दुओं का कत्लेआम होगा। उनके बड़े-बड़े महल, फैक्ट्रियाँ, व्यावसायिक प्रतिष्ठान और चल-अचल सम्पत्तियाँ सभी मुसलमानों की हो जायेंगी, जैसा देश विभाजन के समय हिन्दुओं-सिक्खों की सम्पत्ति के साथ हुआ। इतना ही नहीं, उनकी बेटियाँ, बहुएँ और बहनें भी उनके पतियों के हत्यारों की बीवीयाँ या रखैल बन जायेंगी।**

हिन्दुओं को समझ लेना चाहिए कि मुसलमान अपनी उस राह पर हैं, जिसका हुक्म अल्लाह व उनके रसूल ने दिया है, वे तनिक भी उससे विचलित नहीं हुए हैं। वे अल्लाह और अल्लाह के रसूल के हुक्म का पालन करना कभी नहीं त्याग सकते हैं। उनकी कथनी और करनी कभी एक नहीं हो सकती। **वे अल्लाह के रसूल के सिद्धांत-''लड़ाई धोखेबाजी है'' का कभी त्याग नहीं कर सकते हैं।''...मूर्तिपूजकों को जहाँ पाओ कत्ल करो और पकड़ो और उन्हें घेरो और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो।....** (कुरान ९:५)'' के पालन में ही मुसलमान हर शहरों–बाजारों में वैसी जगह बसते हैं जहाँ से काफिरों को आसानी से घेरा जा सके और अल्लाह के हुक्म के अनुसार उन्हें पकड़ कर जेहाद के समय उनकी हत्या की जा सके।

हिन्दू युवाओं की हत्या, उनकी महिलाओं और सम्पत्ति की लूट, अचल सम्पत्ति पर दखल और बालक-वृद्धों सहित सबका इस्लामीकरण, मुसलमानों को अल्लाह के हुक्म से यही करना है और यही पाना है। हिन्दुओं का यही भविष्य है। जो आज की परिस्थिति के अनुसार निश्चित लगता है, जो हजार वर्ष से चला आ रहा है। निर्णय हिन्दू को लेना है, क्या करें, क्या न करें?

अगर हिन्दू ने संकल्प ले लिया है कि वह तो हाथ पर हाथ धरे बैठेगा, क्योंकि जो कुछ होना है वह तो निश्चित है। भगवान ने तो उसे पहले ही तय कर दिया है, अब किसी कर्म की आवश्यकता नहीं है तो वह समझ ले कि उसका मिटना निश्चित हो चुका है। अगर उसका पुरुषार्थ, आत्मगौरव और शौर्य का कुछ भी भाग शेष होगा तो अन्याय और अधर्म को मिटा कर ही दम लेने की सौगंध लेगा और तब वह कहेगा, आत्मसुरक्षा हर प्राणी का प्रकृति प्रदत्त स्वयंसिद्ध, जन्मसिद्ध अधिकार है। किसी अत्याचार के विरुद्ध प्रतिकार हर व्यक्ति और समाज का न्यायसिद्ध अधिकार है। अत्याचार, शैतान, मानव या अल्लाह किसी नाम से किसी रूप में आवे, अत्याचार का मुकाबला हर प्राणी का न्यायोचित धर्म है। अन्याय को सहन करना अधर्म है। **गीता में कृष्ण का अर्जुन को उपदेश है-''अन्याय और अधर्म को मिटा डालने तक युद्ध करो।''**

चूंकि इस्लाम का यह घोषित विधान है, इसलिए हिन्दुओं को आत्मसुरक्षा के लिए इस्लाम के विरुद्ध वैसी ही कार्रवाई करने का, जिसकी वे घोषणा करते हैं, स्वतः अधिकार मिल जाता है। मुसलमान का निजी और सामूहिक मजहबी फर्ज है कि वे निरंतर जेहाद को जारी रखें। गैर–मुसलमानों को कुचल कर धर्मान्तरित करने के लिए सत्ता पर अधिकार करें, देश को पहले 'दारुल इस्लाम' बनावें और फिर 'शरीयत' कानून लागू करें। शरीयत कानून द्वारा उनका दमन कर मुसलमान बनने पर विवश करें या हत्या करें। तब क्या हिन्दू का यह अधिकार नहीं है कि उसे मिटाने की घोषणा करने वाले को आततायी

घोषित करे और उससे निपटने की कार्यवाही में लग जाये।

हिन्दू समाज, निकट भविष्य में अपने जीवन–मरण की परिस्थिति वाली भारी विपत्ति में पड़ने वाला है। यदि हिन्दू इस समस्या को समझने और इससे निपटने के लिए हर स्तर पर प्रयास से विमुख होते हैं और धन कमाने की लिप्सा में ही लिपटे रहते हैं और उसे ही जीवन के आनन्द का सम्पूर्ण आधार बना डालते हैं या कोई अन्य शौक पाल कर उसी में खोये रहते हैं, भले ही वह अध्यात्म और धार्मिक विषय ही क्यों न हो, तो यह निश्चित जानिये कि वह अपने बच्चों के हत्यारे साबित होंगे। भावी पीढ़ी के विनाश के लिए आपका धन और आपका अध्यात्म मददगार ही होगा। तथ्यों की अनदेखी कर जो हवा में उड़ता है वह अन्ततः गिर कर चूर हो जाता है।

आज फिर आजादी पूर्व की परिस्थिति पैदा हो रही हैं और धर्मनिरपेक्षतावादी, मार्क्सवादी, उदारवादी, अहिंसावादी, अध्यात्मवादी आदि बचकाना भटकाव में हिन्दू समाज को मिटवाने की दिशा में लगे हुए हैं। आज हिन्दू समाज अस्तित्व संकट के निकट पहुँच रहा है। जिन परिस्थितियों से दुनिया भर में बेचैनी फैली है उन्हीं को बढ़ावा देने की कार्यवाई कर रहे हैं। इनको क्या कहा जाये–पागल! मतवाला! या गद्दार! ये सब कुछ हैं, सत्ता लोलुपता के कारण। त्याग और समर्पण के बिना लोक–कल्याण का काम नहीं होता है। आदमी के मान को, उसके विवेक को जागृत कर उसमें त्याग और आत्मोसर्ग की भावना भरते रहने से ही उसका मनोबल उठता है। उस दिशा में कोई काम न कर सिर्फ अपना मतलब साधने की तिकड़मबाजी और पेट भरने में लगे रहने से तो कुछ भी नहीं होता है। पेट तो जानवर भी भरता है।

एक बात ध्यान देने योग्य है कि जो समुदाय जिस भाषा को जानता–समझता है उससे उसी भाषा में बात करनी होती है, अन्यथा वह कोई बात समझ नहीं पाता है। अरब देशों ने समस्त यहूदियों को समुद्र में फेंक देने की घोषणा के साथ बार बार इजरायल पर हमला किया। इजरायल अकेले दम पर इन १३ देशों के हमलों को खम ठोककर झेलता रहा और अंततः उन्हें परास्त करने में सफल भी रहा।

मुस्लिम समुदाय को कोई कितने भी सटीक तर्क से यह नहीं समझा सकता कि ईमान (विश्वास) हर व्यक्ति का अपना

शेष पृष्ठ 11 पर

राष्ट्रीय सुरक्षा की अवहेलना क्यों?

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

देश के सीमावर्ती क्षेत्रों व सैन्य ठिकानों की उच्चस्तरीय सुरक्षा की अवहेलना क्यों हो रही है, जबकि शत्रु बार बार हमको घायल कर रहा है? पिछले सितंबर माह में सर्जिकल स्ट्राइक से आहत होने के उपरांत भी पाकिस्तानियों ने सीमाओं पर अनगिनत बार युद्ध–विराम उल्लंघन किया परंतु हम अपने धैर्य और संयम के गुणगान करने में ही वीरता का परिचय कराते है। सेनाओं को शस्त्र उठाने के प्रति नकारात्मक भाव रखने वाले हमारे राजनैतिक नेतृत्व को सेनाओं पर तो भरोसा है, परंतु वे अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के अभाव में कठोर निर्णय लेने से बचते आ रहें है। अगर केवल पिछले १० वर्षो के ही आंकड़े देखे जाये तो पाक सेनाओं व आतंकवादियों द्वारा हजारों घटनायें संघर्ष विराम उल्लघंन, घुसपैठ तथा हमारे सुरक्षा बलों व सीमावर्ती नागरिको पर घात लगाकर हमले करते रहने धारावाहिक समाचार आते रहें है। इतने पर भी हम शांतिदूत बने रहकर अडिग रहें तो आक्रमणकारी पाक अपनी सुनियोजित जिहादी षडयंत्रो द्वारा भारत को आहत करता ही रहेगा। जरा सोचो जब जब सैनिको के सीमाओं पर पाक सेना द्वारा सिर काटे जाते है तब तब मुगलो द्वारा हिन्दुओं पर ५००–६०० वर्ष तक हुए घिनौने और पाशविक अत्याचारों से भरे काले इतिहास के पन्ने सामने आते रहते है। गैर मुस्लिमों (काफिरों) के सिर कलम करने की जिहादी परंपरा सदियों पुरानी है। हम क्यों भूल गये कि तैमूर लंग के वंशज बाबर ने अपनी विजय के पश्चात आगरा के समीप एक गाँव में महाराजा राणा सांगा की सेना के ८४ हजार सैनिकों के सिर कलम करके एक टीला (शिखर) या पहाड़ बना दिया था जिसका विवरण बाबर की पुत्री गुलबदन ने अपनी एक पुस्तक में लिखा था। ध्यान देने व अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि इस गाँव का प्राचीन नाम जो भी हो पर इस कटे हुए सिरों के पहाड़ या शिखर को मुगलो की जीत के लिये फतेहपुर सीकरी के नाम से जाना जाता है (जिसका अर्थ है विजय शिखर)। आज यह एक पर्यटक स्थल बन चुका है। इसी संदर्भ में एक इतिहासिक तथ्य १५५ वर्ष पूर्व भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के जनक अंग्रेज मि. अलेक्जेंडेर कन्निघम ने अपने अनुसंधानों पर आधारित एक पुस्तक में लिखा था कि मुगल नई दिल्ली स्थित हौजखास की चोर मीनार में हिंदुओं के सिर काटकर उस मीनार में बने आलो में ठूस देते थे ताकि उन्हें देखने वालों में मुगलों के प्रति भय बना रहें। वे लोग हिन्दुओं को चोर कहते थे इसीलिए इसको चोर मीनार कहा गया था। इतिहास की गहराईयों में उतरने से यह ज्ञात होता है कि ऐसे असंख्य स्थल है जहां मुगलों आदि इस्लास्मिक आक्रान्ताओं ने पराजित हिन्दू सेनाओं के सिर काटकर उनके ढेर लगाये और फिर उन पर विजय के जश्न मनाये थे। शत्रुओं के शव को क्षत–विक्षत करके उनके हृदय में भय उत्पन्न करना भी इस्लामिक जिहाद का ही एक भाग है। वर्तमान युग मे सीरिया व ईराक में बगदादी के दरिंदों ने तो पिछले ३–४ वर्षो में काफिरो के सिर को काटने के सैकड़ो वीडियो बनाये और उनको अपलोड करके सम्पूर्ण मानव जगत में अपने खौफनाक अंदाज का कुप्रचार करके सभ्य समाज के करोड़ों लोगों के मन– मस्तिष्क को झकझोर दिया है। १६६६ में अघोषित करगिल युद्ध के समय कैप्टन कालिया व उनके ५ अन्य साथी भटकते हुए पाक क्षेत्र में चले गए थे वहां उनको पाक सैनिको ने १५ मई को पकड़ कर अनेक प्रकार से २१–२२ दिनों तक उत्पीड़ित किया और फिर ६–७ जून को गोली मार दी थी। उनके शव लगभग २२ दिन बाद अत्यंत दर्दनाक स्थिति में भारतीय क्षेत्र में मिले थे। इसके अतिरिक्त अनेक घटनायें हमारे सैनिको के सिर काटने के अतिरिक्त उनके शवों को क्षत–विक्षत करने की वर्षो से होती आ रही है। इस प्रकार अंतरराष्ट्रीय नियमों का खुला उल्लघंन होने पर भी हमारी सरकार मौन है। लगभग ४ वर्ष पूर्व मै स्वयं व्यक्तिगत रुप से कैप्टन सौरभ कालिया के माता–पिता से पालमपुर में मिला था और उनके दर्द को जाना। वे अपने उस वीर पुत्र की जिसने अपने अनुमानतः ३ माह के अल्पकार्यकाल में सरकारी वेतन पाने से पूर्व ही अपने जीवन का राष्ट्र के लिए बलिदान कर दिया हो, के लिए न्याय की आशा लगाए बैठे है?

हमारी ढुलमुल शत्रु नीति व समझौतावादी प्रवृति का ही दुष्परिणाम है कि सर्जिकल स्ट्राइक के बाद भी सीमाओं पर अनेक दर्दनाक घटनाऐं राष्ट्रीय सुरक्षा की पोल खोलने के लिए पर्याप्त है। इस पर भी आज राष्ट्र में पूर्णकालिक रक्षा मंत्री का न होना हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति सतर्कता व गंभीरता के अभाव का बोध करा रही है। कहा गये वो आंख में आंख डाल कर उसी की भाषा में उत्तर देने वाले साहसिक नारे और कहां गई वह एक के बदले दस सिर लाने के उत्साह वर्धक वक्तव्य? क्या यह सब चुनावी लुभावने थोथे नारे थे या कुछ धरातल पर कर दिखाने की वास्तविक इच्छा?

यह विचारणीय बिंदू है कि जब हमारी अर्थव्यवस्था करोड़ों–अरबो के बजट से राजनेताओं व उनके परिवारों एवं अलगाववादियों जैसे देशद्रोहियों को भी अतिविशिष्ट सुरक्षा देने में समर्थ है तो फिर राष्ट्र रक्षा की सर्वोपरिता में अत्याधुनिक शस्त्रों से सेनाओं को सुशोभित करने में परहेज क्यों ? किसी ने कभी यह प्रश्न उठाया कि भ्रष्टाचार की पोषक पिछली संप्रग सरकार (२००४–२०१४) ने १० वर्षो में रक्षा बजट का हजारों करोड़ रुपया अल्पसंख्यको को लाभान्वित करने वाली योजनाओं में क्यों लगाया? क्या मुस्लिम वोट बैंक की लालसा में ऐसा हुआ? जबकि देश में आधुनिक शस्त्रो एवं आवश्यक रक्षा सामग्रियों का अभाव बना हुआ था? परिणामस्वरुप आज देश की रक्षा व्यवस्था भी दुर्बल हो गयी। हमारे अदूरदर्शी राजनेताओं की इन मुस्लिम पोषित व अन्य अराष्ट्रीय राजनीति के दुष्परिणामों का दंश देश को अभी भी झेलना पड़ रहा है। इस पर भी राजनेताओं की सुरक्षा व अन्य सुविधाओं पर होने वाले अत्यधिक व्यय से राष्ट्रीय सुरक्षा का बजट प्रभावित हो तो वह भी आपत्तिजनक व निंदनीय है। साथ ही यह भी सोचना अनुचित नहीं होगा कि धर्मनिरपेक्ष देश में प्रति वर्ष अल्पसंख्यको पर अरबों रुपयों का अनावश्यक व्यय का क्या औचित्य है? जबकि राष्ट्र की सीमाओं को सुरक्षित रखने के लिए सेनाओं को सुरक्षित रखना हम सबका सर्वोच्च दायित्व है। हम सब तभी तक सुरक्षित है जब तक हमारी सेनायें आधुनिक शस्त्रो व तकनीकियों से लैस होकर सीमाओं की रक्षा कर सकें अन्यथा जिहादियों के जनून से बचना असंभव नहीं तो कठिन जरुर होता जा रहा है। अतः आज की परिस्थिति में सेनाओं को सामर्थ्यशाली बनाना किसी भी अन्य योजना की तुलना में परम आवश्यक है। शेष पृष्ठ 11 पर

आदित्यनाथ योगी भी तुष्टीकरण करने लगे हैं! पढ़िए!

१. उ० प्र० की योगी सरकार में कांग्रेसी संस्कृति के अनुसार अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री तो है लेकिन बहुसंख्यक कल्याण मंत्री नहीं है।

२. योगी सरकार ने घोषणा की है कि वह एक वर्ष में १०० सामूहिक निकाह कराएगी। दहेज और मेहर की राशि भी सरकार देगी।

३. मुस्लिम युवाओं को कला कौशल के विकास से जोड़ेंगे।

४. हज यात्रियों को बेहतर सुविधाएं दी जाएंगी।

५. मदरसों का आधुनिकीकरण होगा और आर्थिक सहायता की राशि बढ़ाई जाएगी।

६. अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री मोहसिन रजा ने कहा है कि सरकार सिख समाज से लेकर सभी अल्पसख्यकों की गरीब लड़कियों की शादियों में, प्रत्येक शादी/ निकाह में २० हजार रुपए की सहायता राशि देगी।

७. मुख्यमंत्री ने कहा कि यह कार्य सब का साथ सब का विकास नीति के अनुसार किया जा रहा है।

८. योगी जी, गरीब परिवार तो सनातन धर्मियों और वैदिक धर्मियों में भी बहुत हैं फिर आप उनकी उपेक्षा और अवहेलना क्यों कर रहे हैं?

६. योगी जी, जब आप सांसद थे तब आप सावरकरवादी/हिन्दूवादी थे। अब मुख्यमंत्री बनकर आप गांधीवादी और तुष्टीकरण वादी होते जा रहे हों।

१०. योगी जी, हिन्दू महासभा १०२ वर्ष की हो गई है लेकिन वह अभी जीवित है।

११. स्मरण रखे कि गोरखनाथ मन्दिर के संस्थापक दिग्विजयनाथ और अवैद्यनाथ सदैव सावरकर वादी रहे। आप उन्हीं के शिष्य हैं।

१२. आप जो कार्य सावरकरवाद के विरुद्ध करेंगे तो प्रदेश की जनता को उसकी जानकारी अखबारों–पत्रिकाओं के माध्यम से समय समय पर दी जाती रहेगी। यह जानकारी योगी सरकार के एक महीने की है।

१३. आप स्वयं सनातन धर्मी हैं फिर आपको सनातन धर्मी गरीब कन्याओं का ध्यान क्यों नहीं आया? क्या स्वर्ण जाति में जन्म लेना पाप है?

१४. आप अल्पसंख्यक परिवारों से क्यों नहीं कहते हो कि वे 'हम दो–हमारे दो' की नीति पर चलें अन्यथा गरीबी–बेरोजगारी कैसे दूर होगी?

१५. इलाहाबाद की मुंडेरा मण्डी में जब किसानों का माल नहीं बिका और योगी सरकार ने कोई मदद नहीं की तब दुखी होकर किसानों ने ५० क्विंटल टमाटर–०४ टन मौसमी तथा कई ट्रक पपीते सड़कों पर तथा कूड़ा घरों में फेंक दिया। (१४ अप्रैल २०१७)

१६. इलाहाबाद जिला प्रशासन का सहयोग नहीं करना निन्दनीय और किसान विरोधी कार्य है।

१७. कांग्रेस द्वारा शुरू की गई अल्पसंख्यकों के कल्याणार्थ "मल्टी सेक्टो रल" योजना पर मोदी सरकारी मोटी रकम व्यय कर रही है। यह योजना धर्म पर आधारित है। यह "सब का साथ सब का विकास" नारे के अनुकूल नहीं है। इस योजना के लिए जो धनराशि मोदी सरकार से आए उसे मुख्यमंत्री योगी जी को अस्वीकार कर देनी चाहिए।

१८. बुलन्दशहर जिले के एक गांव के मुस्लिम बाहुल्य मौहल्ले में विकास के कई कार्य हो रहे थे उसी गांव के ३–४ हिन्दू उन कार्यो को देखने के बाद ठेकेदार ने उत्तर दिया कि यह योजना केवल मुस्लिमों के लिए है फिर आपका नम्बर कैसे आ सकता है? निराश एवं उदार होकर उन हिन्दुओं के मुंह से निकल पड़ा कि फिर तो हम भी मुस्लिम हो जाएँ क्योंकि ६६ वर्षो से प्रत्येक सरकार मुस्लिमों का ही विशेष ख्याल रखती रही है। योगी सरकार भी उसी राह पर चलती हुई दिखाई दे रही है। किसान भाईयों से अनुरोध है कि वे हिन्दू महासभा को बड़ा व मजबूत करें।

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

शेष पृष्ठ 6 का

कश्मीर घाटी में...

अब भी हमला न बोला गया तो घाटी में आम कश्मीरी और सुरक्षा बलों की स्थिति मजबूत हो जाएगी। यदि ऐसा हो गया तो कांग्रेस के पास मोदी सरकार पर आक्रमण करने के लिए क्या बचेगा? मणि शंकर अय्यर पाकिस्तान में जाकर टीवी चैनल पर ही कहने लगे कि यदि पाकिस्तान भारत के साथ मधुर रिश्ते चाहता है तो उसे मोदी सरकार को भारत की सत्ता से हटाना पड़ेगा। कार्यक्रम को संचालित कर रहे एंकरों को भी समझ नहीं आया कि इसमें पाकिस्तान क्या भूमिका अदा कर सकता है। इस गहरी योजना के पीछे के रहस्य और सच के बारे में तो केवल और केवल मणि शंकर एय्यर ही बता सकते हैं। लेकिन शायद चौथी पार्टी को लगा कि मणिशंकर की योजना को पाकिस्तान ने स्वीकार नहीं किया। अब क्या रणनीति हो सकती थी? अब केवल एक ही उपाय बचता था कि सीधा सीधा भारतीय सेना पर ही हमला किया जाए। विदेशी आतंकवादी यह काम अपने हथियारों के बल पर करते हैं लेकिन चौथी पार्टी तो ऐसा नहीं कर सकती थी क्योंकि वह तो सिविल सोसायटी का हिस्सा है। उसे सेना का मनोबल गिराने के लिए केवल शब्दों का प्रयोग करना था। इस काम के लिए पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व प्रवक्ता और सांसद संदीप दीक्षित को मंच पर उतारा गया। दीक्षित दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के सुपुत्र है। सुपुत्र ने कहा कि भारतीय सेना के सेनापति कश्मीर में सड़क छाप गुंडे जैसा प्रलाप कर रहे हैं। संदीप बाबू इतना तो जानते होंगे कि अपने सेनापति को गुंडा कहे जाने से सैनिक प्रसन्न तो नहीं होंगे। अलबत्ता इससे पाकिस्तान और अलगाववादी– आतंकवादी अवश्य प्रसन्न होंगे। कांग्रेस कश्मीर घाटी में आखिर क्या देखना चाहती है? जब देश भर में सोनिया कांग्रेस की इस नीति को लेकर हल्ला शुरु हो गया तो उसके एक प्रवक्ता ने कहा कि पार्टी सेनापति पर किए गए इस हमले से अपने आप को अलग करती है। राहुल गान्धी को पप्पू भर कह देने से मेरठ के एक कांग्रेसी नेता को पार्टी से बाहर कर दिया गया लेकिन सेनाध्यक्ष को सड़क छाप गुंडा कहने पर पार्टी ने केवल स्वयं को बयान से ही अलग किया। इस हो हल्ले में ही राहुल गान्धी इटली में अपनी नानी के पास चले गए हैं। मणिशंकर अय्यर से लेकर संदीप दीक्षित तक बरास्ता दिग्विजय सिंह, कांग्रेस की कश्मीर नीति का रहस्य सचमुच सिहरन पैदा करता है।

शेष पृष्ठ 5 का

विज्ञान व धर्म की कसौटी...

न केवलानाम् पयसा प्रतिमवेही माँ कामदूधां प्रसन्नाम्। (२/६३)

हजरत मोहम्मद का फरमान : पैगम्बर मोहम्मद साहब ने 'नाशियात हादी' ग्रन्थ में कहा है गाय का दूध और घी तुम्हारी तंदुरुस्ती के लिए जरुरी है, किन्तु गाय का गोश्त नुकसान करने वाला है। 'हदीस' में कहा गया है कि गाय के गोश्त से बीमारियाँ होती हैं तथा गाय का दूध दवाई व घी रसायन है। मुल्ला मुहम्मद वाकर हुसैनी (महारुल अनवर) का कहना है कि गायों को मारने वाला, फलदार दरख्त काटने वाला और शराब पीने वाला कभी बख्शा नहीं जाएगा। हजरत आयशा (मुहम्मद साहब की पत्नी) ने कहा कि–रसूल अल्लाह ने फरमाया है कि गाय का दूध शिफा है और घी दवा व उसका मांस भयंकर मर्ज है। अतः उस पर छुरी नहीं चलाई जानी चाहिए। उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि गाय को माता कहने का कारण हमारे ऋषि–मुनियों तथा तात्कालिक वैज्ञानिकों के शोध के पश्चात् गाय की उपयोगिता ही है।

शेष पृष्ठ 7 का

जम्मू कश्मीर के दो चेहरे....

यही हो रहा था। स्थिति स्थानीय प्रशासन के काबू में बाहर हो गई थी। अब यदि सेना की टुकड़ी भी उस स्थिति को काबू न कर सकती तो उसका अंजाम क्या हो सकता था? पत्थर चल रहे थे, भीड़ में से आतंकवादी गोली भी चला सकते थे। क्या सेना इस बात की प्रतीक्षा करती कि पहले आतंकवादी गोली चलाएँ और फिर सेना के कुछ सैनिक मारे जाते, तब सेना को सक्रिय होने का अधिकार था? सेना को पैलेटगन का इस्तेमाल करने से रोकने के लिए भी यही मानवाधिकार ब्रिगेड उच्चतम न्यायालय तक दौड़ लगाती रहती है। बन्दूक, पैलेटगन नहीं चलाएगी तो सेना उस स्थिति में क्या आतंकवादियों के मनोरंजन के लिए मनोरंजन कार्यक्रमों का आयोजन करेगी?

नैशनल कान्फ्रेंस के पास तो दोनों विकल्प खुले रहते हैं। हालात देख कर वह पत्थरबाजों का विरोध भी कर सकती है और हालात देख कर वह पत्थरबाजों में ही शामिल हो सकती है। लेकिन सेना के पास तो पत्थरबाजों के साथ मिल जाने का विकल्प उपलब्ध नहीं है। नैशनल कान्फ्रेंस तो समय पाकर पाकिस्तान के पक्ष में भी खड़ी हो सकती है, जैसा आजकल फारुख अब्दुल्ला के बयानों से आभास मिल ही रहा है, लेकिन सेना के पास तो यह विकल्प उपलब्ध नहीं है। सेना को तो हर हालत में बडगाम के उस मतदान केन्द्र में निर्दोष लोगों के प्राणों की रक्षा करनी है। गोगोई का कसूर केवल इतना है कि उसने रक्षा करने के अपने इस कर्तव्य की पूर्ति में फारुख अहमद धर जैसे पत्थरबाजों पर न पैलेट गन चलाई न असली गन। उसने अपनी तरकीब से उसकी भी जान बचा ली और मतदान केन्द्र में फँसे दूसरे लोगों की भी। लेकिन नैशनल कान्फ्रेंस को घाटी में अपनी राजनीति चलाने के लिए लाशों की जरुरत थी। उसके दुर्भाग्य से गोगोई ने उसकी यह माँग पूरी नहीं की। इस कसूर की सजा फाँसी तो होनी ही चाहिए।

साम्यवादी कुनबा (सीपी आई से लेकर एम से होते हुए जैड तक इसमें न जाने कितनी जमायतें हैं। वैसे घाटी की तर्ज पर कहना हो तो जमायत–ए–कम्युनिस्ट कहा जा सकता है) सदा से ही हर उस व्यक्ति और घटना का विरोध करता है जो भारत के हित में है। इसलिए उसने भी गोगोई को गोली मारने को छोड़कर और कोई भी सजा देने की माँग की है। इस जमायत के एक आलातरीन दानिशमन्द पार्थ चटोपाध्याय ने गुस्से में आकर भारतीय सेना के सेनापति को जनरल डायर के बराबर बता दिया है। आदमी अकलमंद है, इसलिए पूरी घटना को घुमाने में माहिर है ही। इसलिए फारुख अहमद धर की वाकफियत अपने पाठकों से यह कह कर करवाता है कि वह अपनी मोटरसाइकिल पर घटनास्थल के पास से गुजर रहा था। इतना सफेद झूठ बोलने की हिम्मत खुद फारुख अहमद धर की भी नहीं हुई। उसने भी यह कहा कि वह मतदान केन्द्र पर वोट डाल रहा था। वह अपने अंगूठे पर काला निशान भी दिखा रहा है। सीताराम येचुरी भी गुस्से में झाग छोड़ रहे हैं। साम्यवादियों की ये कलाबाजियाँ किसी को हैरान नहीं करतीं बल्कि मनोरंजन करती हैं। लोगबाग जानते हैं, ये इस प्रकार की अजीबोगरीब हरकतें करते रहते हैं। वैसे ये आत्मा में विश्वास नहीं करते परन्तु कभी कभी वह जाग जाती है तो इस जमायत में क्या बड़ा क्या छोटा, सब हैरतअंगेज करतब दिखाता है। अब यह आत्मा जागी हुई है। इसलिए कश्मीर घाटी में मानवाधिकारों का जो हनन हो रहा है, उसको देख कर चिंघाड़ रही है। अब यहाँ एक बार फिर बाबा जान के किस्से की ओर आएँ। उसका कसूर केवल इतना था कि वह प्राकृतिक आपदा में फँसे लोगों के लिए मुआवजे की माँग कर रहा था। वह भी उसी कार्ल मार्कस का चेला है जिसकी कसमें हिन्दुस्तान में जमायत–ए–कम्युनिस्ट के लोग खाते हैं। इस लिहाज से बन्दा अपनी बिरादरी का ही हुआ। एक ही कुनबे का होने के नाते भी जमायत–ए–कम्युनिस्ट का फर्ज बनता है कि वह बाबा जान के हक में आवाज बुलन्द करे। लेकिन इस जागी हुई आत्मा को लाईन के उस पार दिखाई नहीं दे रहा, यह सचमुच हैरानी की बात है। उस पार यानि जम्मू कश्मीर का जो हिस्सा पाकिस्तान ने अपने कब्जे में किया हुआ है। उस हिस्से में जमायत–ए–कम्युनिस्ट का ही एक आला कारकुन बाबा जान जेल की सलाखों के पीछे अपनी जिन्दगी के दिन गिन रहा है। लेकिन बाबा जान के मामले में इस पूरी जमात को मानों लकवा मार गया हो। न सीता राम येचुरी की आवाज ने हरकत की। न प्रकाश करात की जमीर जागी और न ही वृन्दा करात के मुँह से सहानुभूति का एक भी लज फूटा। भारत की जमायत–ए–कम्युनिस्ट इस पर रहस्यमय मौन साधे हुए है। सीता राम येचुरी जिनकी नींद, जीप के बोनट पर बैठे फारुख अहमद धर के चित्रों ने हराम कर रखी है और उसके कारण मेजर गोगोई के चित्र को देख कर जिनकी आँखों में खून उतर आता है, उनके जेहन में जेल में बैठा बाबा जान खलबली क्यों नहीं मचाता? बाबा जान और सीता राम येचुरी तो वैसे भी एक ही गुरु कार्ल मार्कस के शिष्य हैं। इसलिए उनके लिए तो और भी जरुरी है कि वे पाकिस्तान के पास बाबा जान के मामले को लेकर प्रोटेस्ट दर्ज करवाएँ। जमायत–ए–कम्युनिस्ट दिल्ली में पाकिस्तान के दूतावास के आगे प्रदर्शन भी कर सकती है। उनके मित्र पार्थ चटोपाध्याय अपनी भाषा और लियाकत का प्रयोग बाबा जान के मामले में भी कर सकते हैं। पाकिस्तानी सेना की तुलना वे जनरल डायर से चाहे न करें वे उसे मानवाधिकारों का हनन करने वाली सेना तो लिख ही सकते हैं। बाबा जान की इस हालत पर जम्मू कश्मीर विधान सभा में सी पी एम के विधायक मोहम्मद यूसुफ तारीगामी भी मौन साध गए। कश्मीर घाटी में पुलिस पत्ता भी हिला दे तो तारीगामी दिन भर चिल्लाते हैं। लेकिन बाबा जान के बारे में रहस्यमय तरीके से खामोश हो गए हैं। पाकिस्तान में जाकर यह गुजारिश करने वाले कि वे लोग हिन्दुस्तान में से नरेन्द्र मोदी की सरकार हटा दें, ऐसे सोनिया कांग्रेस के शिरोमणी मणिशंकर अय्यर भी चुप्पी मार गए। अब्दुल्ला परिवार की जीभ ही तालुए से चिपक गई। इन सब को फारुख अहमद धर के पक्ष में नहीं बल्कि बाबा जान के हक में बोलना चाहिए, लेकिन यकीनन वे ऐसा नहीं करेंगे। क्योंकि इससे जम्मू कश्मीर के उस हिस्से के लोगों को, जो पाकिस्तान के कब्जे में हैं, संदेश जाएगा कि भारत के लोग उनकी लड़ाई में उनके साथ हैं। यह संदेश न तो पार्थ चटोपाध्याय देना चाहते हैं और न ही हिन्दुस्तान में जमायत–ए–कम्युनिस्ट के लोग। जमायत–ए–कम्युनिस्ट को लगता है अन्याय और जुल्म तो फारुख अहमद धर के साथ हुए हैं, इसलिए वे मेजर गोगोई को सजा की माँग कर रहे हैं लेकिन बाबा जान का मामला उनकी नजर में कोई अहमियत नहीं रखता। क्योंकि बाबा जान के पक्ष में बोलने का अर्थ, यह संदेश देना है कि पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू कश्मीर में वहाँ के वाशिन्दें बहुत अत्याचार हो रहा है। यदि यह सन्देश कश्मीर घाटी में फैल गया तो वे अनसर जो कश्मीर घाटी के लोगों को पाकिस्तान की जन्नत के नकशे दिखाते रहते हैं बेनकाब हो जाएँगे और अवाम के आगे पाकिस्तान की असलियत खुल जाएगी। यदि बाबा जान को भी कोई मेजर गोगोई जैसा मिल जाता तो उसे भी जीप के बोनट पर घुमा कर छोड़ देता। लेकिन उसे मिला पाकिस्तान की सेना का मेजर। उन्होंने उसकी जितनी पिटाई हो सकती थी की और फिर उसे उमर भर जेल में सड़ने के लिए डाल दिया। फारुख अहमद धर और बाबा जान दोनों ही सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे थे। पहले को जीप के बोनट पर बिठा कर छोड़ दिया गया और दूसरे को जिन्दगी भर के लिए जेल में डाल दिया गया। लेकिन इसे बाबा जान का सौभाग्य ही कहना चाहिए कि दुनिया भर के लोगों का ध्यान उसके साथ हुए अन्याय की ओर गया है। अनेक देशों में लोग शोर मचा रहे हैं कि बाबा जान को जेल से छोड़ना चाहिए। गिलगित बल्तीस्तान में तो लोग सड़कों पर उतर कर इस बात के लिए प्रदर्शन भी कर रहे हैं। यहाँ तक कि वामपंथियों में जिसको सिर आँखों पर बिठाया जाता है, ऐसे नोयम चोमस्की ने भी माँग कर डाली कि बाबा जान बेकसूर हैं और उसे छोड़ दिया जाना चाहिए। देखें अब्दुल्ला परिवार और जमायत–ए–कम्युनिस्ट की आत्मा कब जागती है?

शेष पृष्ठ 8 का

मुस्लिम शरीयत में परिवर्तन.....

अधिकार है। हर मनुष्य को संस्कार से जो ईमान (विश्वास) मिलता है, उसे वह शिक्षा, बुद्धि, विवेक, अनुभव एवं अनेक विधियों से प्राप्त ज्ञान द्वारा बदल सकता है और बदलना चाहिए क्योंकि मनुष्य इसी तरीके से सृष्टि के समय से ही निरंतर विकास करता आ रहा है। परिवर्तन प्रकृति का अनिवार्य और शाश्वत नियम है। मनुष्य प्रकृति का ही भाग है, वह परिवर्तन से मुक्त नहीं हो सकता है।

नये जन-सांख्यिकी आंकड़ों से उभरती आशंकाएं

१४०० साल पहले जब मुहम्मद द्वारा इस्लाम की नींव रखी गई, मुस्लिम की संख्या मात्र ७० थी, वर्तमान में विश्व में मुस्लिम १६० करोड़ हैं तथा आज मुस्लिम देशों की संख्या बढ़कर ५६ हो गई है। आखिर दुनिया में मुसलमानों की संख्या में इतनी वृद्धि कैसे हुई? स्पष्ट है– तलवार के जोर पर बलात धर्म–परिवर्तन द्वारा, गैर–मुस्लिमों को मिटा कर व स्वयं प्रजनन दर बढ़ा कर। २०३० में विश्व की कुल सम्भावित जनसंख्या में मुस्लिमों की तादाद एक–चौथाई होने का अनुमान है। २०५० में वे बढ़कर २८० करोड़ हो जायेंगे। २०७० में विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या मुसलमानों की होगी। **इस्लाम विश्व का सबसे तेजी से बढ़ने वाला धर्म है। पाकिस्तान में कोई मुसलमान धर्मान्तरण करके हिन्दू, सिख या ईसाई नहीं बन सकता लेकिन भारत में मुस्लिम धर्मान्तरण कराके हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का अभियान चलाते रहे हैं। मुस्लिम आबादी की प्रजनन-दर गैर-मुस्लिमों की प्रजनन-दर से ज्यादा है। कभी इस्लाम तलवार के जोर से फैला था अब जनसंख्या के जरिए उसे फैलाया जा रहा है।** मुसलमानों के साथ समस्या यह है कि वे देश के कानून के मुताबिक नहीं, अपने धर्म के कानून के मुताबिक रहना चाहते हैं। दूसरी ओर शरीयत में वर्णित अपराधी दण्ड–विधान पर चुप रहना ही उचित समझते हैं, कहीं ये नियम भारत में लागू न हो जाये। **(शेष अगले अंक में)**

शेष पृष्ठ 1 का

मुंबई धमाकों के गुनहगार ने......

१२ मार्च १९९३ को हुए १२ बम धमाकों में २५७ लोगों की जान गई थी और करीब ७१२ लोग जख्मी हुए थे। मामले में सबसे बड़ा फैसला साल २००६ में सुनाया गया था। अदालत ने सातों अभियुक्तों की अलग से सुनवाई शुरू की थी। मुस्तफा दौसा को २००४ में यूएई से गिरफ्तार किया गया था, वहीं साल २००५ में अंडरवर्ल्ड डॉन अबू सलेम और उसकी गर्लफ्रेंड मोनिका बेदी का पुर्तगाल से प्रत्यर्पण किया गया था। मुंबई ब्लास्ट के शेष पांचों आरोपियों को भी दुबई से भारत लाया गया था। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा कि आंतकियों के साथ कोई नरमी नहीं होनी चाहिए। देश के गद्दारों पर कड़ी कार्रवाही होनी चाहिए।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक..150/- रुपये
द्विवार्षिक..300/- रुपये
आजीवन सदस्य..1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 1 का

केरल में पाकिस्तानी क्रिकेट.....

अन्य लोगों पर केस दर्ज किया गया है। उन्होंने बताया कि इन लोगों ने कथित तौर पर पाकिस्तान क्रिकेट टीम के सपोर्ट में नारे लगाए और पटाखे फोड़े, १८ जून को लंदन में हुए इस फाइनल क्रिकेट मैच में पाकिस्तान ने भारत को १८० रनों से हराकर प्रतिष्ठित ट्राफी पर कब्जा कर लिया था। पुलिस ने कहा कि गैर कानूनी तरीके से इक्ट्ठा होने, दंगा करने और भारतीय दंड संहिता के तहत विस्फोटक पदार्थों का लापरवाहीपूर्ण इस्तेमाल करने के आरोप में कुल २३ लोगों पर मामला दर्ज कर लिया गया है। पुलिस ने बताया कि हालांकि अभी तक इस मामले में किसी की गिरफ्तारी नहीं हुई है। पुलिस बाकी २० लोगों की पहचान करने की जांच कर रही है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से कहा कि देशद्रोहियों को देश निकाला कर पाकिस्तान भेजा जाये। देशद्रोहियों के लिये देश में कोई जगह नहीं होनी चाहिए।

शेष पृष्ठ 12 का

तीन तलाक, निंदा से निदान.....

धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देते नहीं थकता, परन्तु मुस्लिम युवतियों व महिलाओं से दशकों से हो रहे ऐसे अमानविय अत्यचार के विरुद्ध आवाज उठाने से भी डरता है। केन्द्र सरकार द्वारा गठित विधि आयोग ने इन सभी विवादों को दूर करने के लिए एक सर्वे भी करवाया गया है। संभवत इस सर्वे की परिणाम भी मुस्लिम महिलाओं के पक्ष में ही होंगे। इसमे भी कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि भविष्य में भी मुस्लिम महिलाओं को उनके संघर्ष का समुचित न्याय मिलेगा? निसंदेह न्यायपालिका जनता के अधिकारों की रक्षा एक अभिभावक के रुप में करती है। अत कानून व्यवस्था को समाजिक जीवन में उन्नति की ओर ले जाता है। किसी के जीवन को अंधेरी कोठरी में बंद करने के लिए नहीं। आज समाज में इस कुरीति को लेकर असमंजस नहीं है। जब कुरीति की निंदा आरम्भ हुई है तो समझना होगा की इस तीन तलाक की 'तलाक बंदी' भी जल्द होगी। यानी मुस्लिम समाज की यह कुरीति निंदा से निदान की ओर निकल चुकी है।

शेष पृष्ठ 9 का

राष्ट्रीय सुरक्षा की अवहेलना........

इसके साथ ही इन विषम परिस्थितियों में आत्मरक्षा व राष्ट्र रक्षा के लिए सैन्य प्रशिक्षण भी सामान्य नागरिको के लिए अनिवार्य किया जाय तो अनुचित न होगा। निसंदेह जब हमारा देश सदियों से आतंकवादियों के अत्याचारों को झेलता आ रहा है तो जिहादियों व देशद्रोहियों के बढ़ते आतंक की आहट को अन्देखा नहीं किया जा सकता। हमारे पास आधुनिक शस्त्रों के साथ साथ सैनिक व अन्य सुरक्षाबलों की भारी कमी है और वे भी सीमाओं आदि पर नित्य शत्रुओं व आतंकियों से संघर्ष में व्यस्त है तो ऐसे में देश की आंतरिक सुरक्षा केवल पुलिस के भरोसे तो संभव नहीं। समाचार पत्रो के माध्यम से गुप्तचर विभाग की सुचनाओ द्वारा यह ज्ञात भी होता रहा है कि सीमाओँ के साथ साथ अनेक नगरों में आतंकवादियों के ठिकाने बने हुए है जहां उनको विभिन्न प्रकार का सैन्य प्रशिक्षण दे कर जिहाद के लिए तैयार किया जाता है। अनेक पकडे गए आतंकवादियो से प्रायः इन स्थलो का पता भी चलता है फिर भी सामान्यतः उनकी जांच नहीं हो पाती क्योंकि वह विशेष सम्प्रदाय से सम्बंधित होने के कारण राजनीति का लाभ उठा लेते है। पिछले कुछ वर्षो से तो जिहादियों ने हमारे सैन्य व पुलिस ठिकानों को लक्ष्य बना कर उनको हानि पहूंचाने का नया ढंग निकाला है। जैसा कि पिछले दो वर्षो में दीनानगर थाना, गुरदासपुर (२७ जुलाई २०१५), बीएसएफ के काफिले, उधमपुर (५अगस्त २०१५) ,पठानकोट एयरबेस (३ जनवरी २०१६) व उरी सेना ब्रिगेड मुख्यालय (१८ सितंबर २०१६) पर हमले हुए थे। इसके अतिरिक्त पहले भी देश के अनेक भागों में हुए विभिन्न दंगों में यह देखा जाता रहा है कि ये दंगाई आतंकी पुलिस चौकियों, थानों व पुलिस प्रशासकीय कर्मचारियों व अधिकारियों पर भी आक्रमण करने से नहीं चूकते जैसा कि पिछले वर्षो में मालदा आदि पश्चिम बंगाल के अनेक क्षेत्रों में भी हुआ था। सम्भवतः सामान्य नागरिको की उदार, अहिंसक, भीरु व झंझट से बचने या संघर्ष से दूर रहने की प्रवृति के कारण ही जिहादियों ने किसी विशेष षडयंत्र के अन्तर्गत सुरक्षा कर्मियों व उनके ठिकानों को नष्ट करने की कुटनीति बनाई हो और अगर वे इसमें सफल होते रहे तो भविष्य में आम नागरिकों की सुरक्षा कैसे संभव हो पायेगी? अतः ऐसी स्थिति में जिहादियों से अपनों को सुरक्षित करने के लिए सामान्य नागरिकों का सैन्य प्रशिक्षण बहुत आवश्यक है। यह हमारा मौलिक व संवैधानिक अधिकार भी है कि राष्ट्र रक्षा के लिए हर क्षण तैयार रहे। इजराइल जैसे देशो से हमको शिक्षा लेनी होगी वहां का हर नागरिक सैनिक भी है क्योंकि उनको नित्य मजहवी आतंकियों के हमलो का सामना करना पड़ता है। आज हमारी स्थिति भी बहुत कुछ इजराइल के समान ही है क्योकि हमें भी दिनप्रतिदिन कही न कही जिहादियों से जूझना पड़ता है। अतः राष्ट्रीय सुरक्षा की अवहेलना किसी भी दृष्टिकोण से उचित नही और उसको और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए अनेक देशो की भाँति देश के सामान्य नागरिको के लिए सैनिक शिक्षा अनिवार्य करनी चाहिये।

दिनांक 12 जुलाई से 18 जुलाई 2017 तक

साप्ताहिक व्रत-पर्व

पर्व	तिथि	दिन
चतुर्थी	13 जुलाई	वीरवार
अष्टमी	17 जुलाई	सोमवार
नवमी	18 जुलाई	मंगलवार

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

किसी की मदद का इंतजार नहीं, खुद कमान संभालेगा हिंदू

यूपी में हिंदूवादी संगठन अब डंडा–त्रिशूल बांटकर हिंदुओं के 'सोए स्वाभिमान' को जगाने का काम करेंगे। बजरंग दल अपने प्रशिक्षण शिविरों में त्रिशूल बांट रहा है वहीं हिंदू जागरण मंच सितंबर से डंडा (दंड) बांटने की तैयारी कर रहा है। मंच का मानना है कि हिंदू बहुत ज्यादा सहनशील और भाग्यवादी हो गए हैं। उन्हें कर्म करना सिखाना होगा। यूपी में बजरंग दल के नेता के मुताबिक हम हर बार प्रशिक्षण शिविर में त्रिशूल बांटते हैं और इस बार भी देश भर में जहां भी प्रशिक्षण शिविर चल रहा है वहां युवाओं को प्रशिक्षण देने के बाद त्रिशूल बांट रहे हैं। हिंदू जागरण मंच भी अब इसकी तैयारी में है। मंच के यूपी अध्यक्ष अज्जू चौहान ने एनबीटी से कहा कि हम सितंबर से हिंदुओं को डंडा बांटना शुरू करेंगे। इसकी शुरूआत आगरा से होगी जहां करीब २५०० दंड बांटे जाएंगे। फिर यूपी के हर जिले में इस तरह का कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। उन्होंने इसे राष्ट्र रक्षक दंडधारण का नाम दिया है। चौहान ने कहा, 'हिंदू समाज में ३३ करोड़ देवी देवता हैं और हिंदुओं ने अपने सारे हथियार देवी–देवताओं को दे रखे हैं। आज स्थिति यह है कि किसी हिंदू के घर पर सांप भी निकल आए तो उसे मारने के लिए उनके पास डंडा नहीं होता। हिंदू कर्म पर भरोसा करने की बजाय भाग्यवादी हो गया है। इसलिए हम अब हिंदुओं का स्वाभिमान जगाने के लिए अभियान चलाएंगे। हम उन्हें बताएंगे कि हर हिंदू के घर पर कम से कम एक अस्त्र जरूर होना चाहिए। हर हिंदुओं के घर में मंदिर में त्रिशूल और हाथ में लट्ठ (डंडा) होना चाहिए।' उन्होंने कहा कि आने वाले वक्त में इसकी जरूरत पड़ेगी। कर्म पर भरोसा करने की बजाय हिंदू भाग्यवादी हो गए हैं। इसके लिए हिंदू जागरण मंच कर रहा है कार्यक्रम, हिंदू जागरण मंच का कहना है कि हिंदू के घर पर कम से कम एक अस्त्र जरूर होना चाहिए। हिंदू जागरण मंच के यूपी अध्यक्ष अज्जू चौहान ने त्रिशूल और डंडा बांटने को बेहद जरूरी बताते हुए कहा, 'अगर कोई हमारी बहन–बेटी को छेड़ने की कोशिश करेगा तो घर पर यह हथियार जरूरी है। अगर कहीं मंदिर टूट रहा होगा या गौ माता संकट में होंगी तो हिंदू को किसी की मदद का इंतजार करने की जरूरत नहीं होनी चाहिए। घर में हथियार रहेगा तो वह उसे उठाकर खुद ही नेतृत्व कर सकता है। कहीं भी दंगे होते हैं तो हिंदुओं के पास त्रिशूल और डंडा होना जरूरी है।' उन्होंने कहा कि हम अपने प्रशिक्षण शिविर में भी यही सीख दे रहे हैं। चौहान ने कहा कि जब नालंदा विश्वविद्यालय तोड़ा जा रहा था उस वक्त वहां करीब १० हजार स्टूडेंट मौजूद थे और अलाउद्दीन खिलजी की सेना में इसके एक चौथाई सैनिक थे। अगर स्टूडेंट्स मुकाबला करते तो नालंदा विश्वविद्यालय को बचाया जा सकता था। उन्होंने कहा कि भगवान राम ने तपस्या की साथ ही जरूरत पड़ने पर आक्रमण भी किया। हम इसी तरह हिंदुओं को कर्मठ बनाना चाहते हैं।

ललित मैनी

तीन तलाक, निंदा से निदान की ओर....

हमारे में समाज फैली कुरीतियां लगातार निंदा का कारक बनती रही हैं और समाज की यही निंदा इनके निदान का, अगर यू कहा जाए की निंदा निदान की जननी है। तो यह बात बेमानी न होगी क्योंकि निंदा से ही निदान के रास्ते की खोज होती है। बिते सैकडों वर्षो से हमने अपने समाज की बहुत सी कुरीतियों को निंदा के रास्ते ही निदान तक पहुचाया है। इससे हमारे भारतीय समाज में लगातार निखार आ रहा है। हम वैश्विक उन्नति के साथ–साथ सामाजिक उन्नति भी कर रहे हैं। जिस प्रकार चाय को पीने के लिए उसे छल्लनी से छान जाता है। जिससे चाय बिना किसी बाधा के पी जा सके उसको बनाने वाली चाय की पत्ती स्वाद को बेमानी न कर दे, उसी प्रकार हमारी सामाजिक कुरीतियों का निदान हमारे समाज में लगातार निखार ला रहा है। जो भारतीय समाज के विकास और उसकी उन्नति के लिए बहुत आवश्यक है। ऐसी ही एक कुरीति की आज समाज में निंदा हो रही है। जो आज तक हमारे मुस्लिम समाज में व्याप्त है वह कुरीति है तीन तलाक जिसका दर्द मुस्लिम समाज की महिलाएं लगातार झेल रही हैं। एक अच्छी बात जो अब हो रही है वह यह है,इस तीन तलाक रुपी सामाजिक बुराई की निंदा, क्योंकि निंदा ही निदान की और ले जाती है। तो यह उम्मीद करनी चाहिए की मुस्लिम महिलाओं को निदान भी मिलेगा। इसकी शुरुवात करते हुए तीन तलाक बंदी के समर्थन में इलाहाबाद उच्च न्यायालय का परामर्श सराहनीय कहा जा सकता है। जिसमे कहा गया है कि मुस्लिम समाज में यह प्रथा उनकी अपनी ही महिलाओं के प्रति घोर अन्याय व अत्याचार है। बहुत से मुस्लिम धर्म गुरु इसके पक्ष में खडे दिखे हैं तो कइयों ने इसका विरोध करके भारत सरकार को भी ललकारने की भी कुचौष्ठा की है। धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र में एक धार्मिक कुरीति को बनाये रखकर उस समाज की महिलाओं को अन्धकार में धकेले रहना क्या उचित है? आज आधुनिक विज्ञानमय समाज में तीन तलाक मानवता पर कलंक नहीं तो और क्या है? अपने ही समाज की महिलाओं को इस व्यवस्था में रखकर उसे व्यभिचारी बनाने से क्या मुस्लिम पुरुषों कोई संतोष मिलेगा? संभवत नहीं, हां कुछ कट्टरपंथियों की वर्षो से चली आ रही उनकी अधिनायिकतावादी दादागीर पर अंकुश अवश्य लगेगा? वस्तुत तीन तलाक, हलाला व बहु विवाह से पीड़ित मुस्लिम महिलाओं की सजगता व सक्रियता ने ही न्याय की मांग करके अपने स्वतंत्र अधिकारों के लिए संघर्ष छेड़ा है। लेकिन यह हमारे तथाकथित धर्मनिरपेक्ष समाज पर एक तमाचा है, जो

शेष पृष्ठ 11 पर

कबिरा खड़ा बजार में

लाचार नजर आ रहे है बातों के धनी

उत्तर प्रदेश की जनता ने जिस जानदार–शानदार तरीके से भारतीय जनता पार्टी को विधान सभा चुनाव में बहुमत दिलाया था, उससे बीजेपी और खासकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के ऊपर अपेक्षाओं का बोझ बढ़ गया था। मोदी पर इसलिये क्योंकि मोदी के फेस को आगे करके बीजेपी ने चुनाव लड़ा था। मोदी ने चुनाव प्रचार के दौरान प्रदेश की बिगड़ी कानून व्यवस्था और किसानों की बदहाली को बड़ा मुद्दा बनाया था। बीजेपी जब चुनाव जीती तो तेजतर्रार योगी आदित्यनाथ को इस उम्मीद के साथ सीएम की कुर्सी पर बैठाया गया कि वह जनता की कसौटी पर खरे उतरेंगे। तीन माह का समय होने को है, मगर आज यही दो समस्याएं योगी सरकार और बीजेपी आलाकमान के लिये परेशानी का सबब बनी हुई हैं। दिल्ली से लेकर लखनऊ तक में पार्टी नेताओं, प्रवक्ताओं को जनता और मीडिया के तीखे सवालों का जवाब देना पड़ रहा है। योगी सरकार की पहली कैबिनेट बैठक में छोटे–मझोले किसानों का कर्ज माफ करने को मंजूरी दे दी गई थी, लेकिन तकनीकी कारणों से ऐसा हो नहीं पाया। योगी सरकार कार्यकाल के तीसरे माह में चल रही है, मगर अभी तक कर्ज माफी के नाम पर किसानों के हाथ कुछ भी नहीं लगा है। इसको लेकर किसानों में तो नाराजगी स्वाभाविक है, विपक्ष भी लगातार किसानों का कर्ज नहीं माफ हो पाने के मुद्दे को खाद–पानी देने का काम कर रहा है। किसान कर्ज माफी को लेकर योगी सरकार के प्रति आशंकित हैं तो बिगड़ी कानून व्यवस्था के चलते आमजन भयभीत हैं। प्रदेश की चरमराई कानून व्यस्था ने विपक्ष को बैठे–बैठाये योगी सरकार पर हमलावर होने का मौका दे दिया है। भले ही नई सरकार के गठन के बाद भी यूपी में हालात बहुत ज्यादा नहीं बदले हों, लेकिन जनता का योगी सरकार पर विश्वास अभी डिगा नहीं है। सीएम योगी पूरी ईमानदारी और मेहनत से काम कर रहे हैं और सबको यही उम्मीद है कि देर–सवेर योगी की मेहनत रंग लायेगी। परंतु इसके लिये योगी जी को सरकारी मशीनरी के पेंच और टाइट करने होंगे। अभी तक तो यही नजर आ रहा है कि जिनके हाथों में कानून व्यवस्था दुरूस्त करने की जिम्मेदारी है, वह यूपी में आये बदलाव को देख नहीं पा रहे हैं और पुराने तौर–तरीकों पर ही चल रहे हैं। कुछ पुलिस के अधिकारी तो योगी राज में भी भी अखिलेश के प्रति वफादार नजर आ रहे है, जिसकी वजह से भी कानून व्यवस्था में सुधार देखने को नहीं मिल रहा है। बेटियों को लेकर योगी आदित्यनाथ की पहल ने निश्चित तौर पर उत्तर प्रदेश की बच्चियों और महिलाओं की सुरक्षा और उनकी प्रगति के लिए बहुत बड़ी उम्मीद जगा दी। सीएम योगी ने पहले पहल महत्वपूर्ण पदों पर बैठे अखिलेश राज के अधिकारियों से ही काम चलाने का प्रयास किया था, लेकिन इन अधिकारियों की वफादारी नहीं बदली तो प्रदेश की कानून व्यवस्था पर नकेल कसने के लिए बड़े पैमाने पर आईएएस और आईपीएस अफसरों का तबादला किया गया। योगी सरकार को दोधारी तलवार पर चलते हुए यूपी को पटरी में लाने के लिये लम्बी मशक्कत करनी होगी। एक तरफ प्रदेश का विकास करना होगा दूसरी तरफ विरोधियों के मंसूबों पर भी पानी फेरना होगा, जो योगी सरकार को बदनाम करने और अपने हित साधने के लिये किसी भी हद तक जाने को तैयार नजर आ रहे हैं।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 05 जुलाई से 11 जुलाई 2017 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।